



वक्त की कदर करो,  
वर्षों एक बार गया  
हुआ वक्त लौटकर नहीं  
आता।



# परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 376, नई दिल्ली, सोमवार 16 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 अंक 2 (चंद्रमा) का अंक ज्योतिष में प्रभाव:

06 पाठ्यपुस्तकों से परे शिक्षण: बेहतर सीखने की कुंजी

08 वर्ल्ड कंज्यूमर राइट्स डे मनाया गया: 'सेफ प्रोडक्ट्स, कॉन्फिडेंट कंज्यूमर'

## निशुल्क स्वास्थ्य शिविर: जनसेवा का अनुपम उदाहरण

परिवहन विशेष संवाददाता

दिल्ली के शिवाजी एन्क्लेव स्थित गुरुद्वारा सिंह सभा में 15 मार्च 2026 को आयोजित निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर ने क्षेत्रवासियों को स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ पहुंचाया।

टेपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट द्वारा वैश्वी फाउंडेशन और मैक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल द्वारा का सहयोग से लगाया गया यह शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक चला। लगभग 300 लोगों ने विभिन्न जांचों, मुफ्त दवाओं और इलाज का लाभ उठाया।

**उपलब्ध जांच सुविधाएं**

1. आंखों की जांच, मोतियाबिंद सर्जरी के साथ मुफ्त भारतीय लेंस।
2. दांतों की जांच, रक्तचाप, मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल तथा हड्डियों की घनत्व जांच।

यह सुविधाएं इस जांच शिविर में पूर्णतः नि:शुल्क रहीं, जिससे गरीब और जरूरतमंद वर्ग को विशेष लाभ हुआ।

**चिकित्सकीय टीम और आयोजन प्रबंधन**

\* वैश्वी फाउंडेशन से डॉ. मनोज कुमार, रिशु भारद्वाज एवं 8 अन्य चिकित्सकों ने सेवाएं दीं।

\* मैक्स हॉस्पिटल से विकास राय और उनकी टीम भी उपस्थित रही।

\* सर्व धर्म मित्र मंडल ने आयोजन प्रबंधन किया तथा भंडारा लगाकर सभी को प्रसाद वितरित किया।

**गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति**

कार्यक्रम में प्रदीप शर्मा (पूर्व निगम पार्षद), जयदेव अवतार सिंह (पूर्व महापौर उत्तरी दिल्ली), अधिवक्ता रविंदर सिंह (भाजपा

दिल्ली प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य), देवेन्द्र यादव (ओबीसी मोर्चा उपाध्यक्ष), डाल चंद (रघुबीर नगर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष) मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

अन्य उपस्थित संचालक मंडल में सर्व धर्म मित्र मंडल के अध्यक्ष केके छाबड़ा, पत्रकार वीरेंद्र कुमार चतुर्वेदी, मंदिर प्रधान पंडित राम अवतार पांडे, गुरुद्वारा प्रधान बलबीर सिंह, उपाध्यक्ष कुलदीप सिंह, गुरजीत सिंह, कंचन कच्छप, अजीत सिंह सेवादार, गौरी शंकर, रविंदर कौर, मनोहर सिंह, प्रीतपाल मदान, वेद प्रकाश, नीलम अरोड़ा एवं सचिन वर्मा उपस्थित रहे जिन्होंने इस कार्यक्रम को जनहित में प्रस्तुत करने के लिए अपना सर्वस्व प्रस्तुत किया।

इस जांच शिविर में टेपल्स आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट के चेयरमैन संजय कुमार बाठला, महासचिव पंकी कुंडू, सचिव सुनीता शर्मा, उपाध्यक्ष अशोक नारांग, उपाध्यक्ष केके छाबड़ा, सदस्य जय भगवान, नवदीप सिंह और फिरोज खान ने अपना पूरा समय और सहयोग प्रदान किया।

**जन प्रतिक्रिया और महत्व**  
क्षेत्रवासियों ने सर्व धर्म मित्र मंडल अध्यक्ष केके छाबड़ा की भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा भविष्य में ऐसे आयोजनों के लिए सहयोग का आश्वासन दिया।

यह शिविर जनहित में एक मील का पथर साबित हुआ, जो सामाजिक एकता और स्वास्थ्य जागरूकता को मजबूत करता है।

इस जनहित शिविर गुरुद्वारा सिंह सभा, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, शिवाजी एन्क्लेव से क्षेत्र के कम से कम 300 नागरिकों को पूर्ण फायदा प्राप्त हुआ।





## सेहतमंद रहने के लिए हेल्दी खाना जरूरी है. लेकिन हेल्दी खाना होता क्या है?

पिकी कुंठू

ज्यादातर लोग इसका मतलब नहीं समझ पाते हैं. हेल्दी खाना कोई फैंसी या महंगे फूड्स नहीं है। सिंपल और संतुलित भोजन जिसमें दाल, अनाज, हरी सब्जियां शामिल हो इसे हेल्दी मील कहा जाता है.

इन दिनों मोटे अनाज के फायदों को लेकर काफी ज्यादा चर्चा हो रही है जबकि ये अनाज जिन्हें मिलेट्स भी कहा जाता है, आज हजारों में बिक रहे हैं सदियों से भारतीय घरों में खाए जा रहे हैं गेहूं की रोटी भारतीय थाली का सबसे अहम हिस्सा है. हालांकि ये अपने आप में ही हेल्दी होता है, लेकिन यदि आपको इससे अधिकतम फायदा चाहते हैं तो हमेशा दो अनाजों का कॉम्बिनेशन डाइट में शामिल करें.

इन चीजों से बनाएं दुनिया का बेस्ट आटा

हार्ट एक्सपर्ट और सोशल मीडिया पर वायरल हार्ट एक्सपर्ट डॉक्टर ने बताया कि यदि आप आटे में रागी, काबूली चना, बाजरा या ज्वार का आटा मिलाकर खाने लगे तो इससे बुढ़ापे तक बीमारियों का रिस्क कम हो जाएगा. ये छोटा सा बदलाव आपको डायबिटीज, लिवर की समस्या, किडनी डिजीज या तक की जोड़ों के दर्द और खून की कमी से बचा सकता है.

रागी- इसे भारत के कुछ हिस्सों में नाचनी भी कहा जाता है. ये एक तरह का हाई प्रोटीन मिलेट है, जिसे आप वेट लॉस डाइट में भी



शामिल कर सकते हैं. इसके साथ ही इसमें कैल्शियम की मात्रा भी अच्छी होती है, जो इसे हड्डियों के लिए फायदेमंद बनाती है. इतना ही नहीं इससे आपकी स्किन भी हेल्दी रहती है.

काबूली चना- इसका इस्तेमाल घरों में छोले बनाने के लिए किया जाता है. जबकि विटामिन, मिनरल्स से भरपूर इस चने के आटे से बनी रोटी से आप अपने श्वेत कोलेस्ट्रॉल रख सकते हैं. साथ ही इसमें फाइबर अच्छी मात्रा में होता है जो पाचन को भी दुरुस्त रखता

है.

ज्वार- यदि आपकी इम्यूनिटी कमजोर है, जल्दी-जल्दी बीमार होते हैं तो आटे में ज्वार का आटा मिलाकर खाएं. इससे आपकी बीमारियों से लड़ने की ताकत बढ़ेगी साथ ही कोलेस्ट्रॉल और शुगर भी कंट्रोल रहेगा जो हेल्दी हार्ट के लिए बहुत जरूरी है.

बाजरा- डॉक्टर छाजेर बताते हैं कि जो लोग बाजरा खाते हैं, वो मोटे नहीं होते हैं साथ ही उनका शरीर बहुत मजबूत होता है. ये

अनाज आपको मोटापे, खूनी की कमी, डायबिटीज के साथ कैन्सर भी बचाने का काम करता है.

कैसे करें इस्तेमाल डॉक्टर इन आटों को बारी-बारी गेहूं के आटे के साथ मिलाकर खाने की सलाह देते हैं. इसके अलावा आप इन सभी आटे को एक साथ मिलाकर भी रोटी बना सकते हैं. यदि आपको साउथ इंडियन रेसिपी पसंद है तो डोसा और इडली बनाने में भी आप मिलेट्स का इस्तेमाल कर सकते हैं.

## सातों दिनों के नाश्ते की संक्षिप्त विधियाँ



पिकी कुंठू

1. सोमवार: कांदा पोहा

\* विधि: पोहा को धोकर 5

मिनट भिगो दें। कड़ाही में तेल गरम

कर राई, करी पत्ता, मूंगफली और

बारीक कटा प्याज (कांदा) भूनें।

अब हल्दी, नमक और पोहा डालकर

अच्छी तरह मिलाएं। ऊपर से हरा

धनिया और नींबू निचोड़कर परोसें।

2. मंगलवार: साबूदाना

खिचड़ी

\* विधि: साबूदाना को 3-4 घंटे

भिगोएं। एक पैन में घी गरम कर

जोरा, कड़ी पत्ता, आलू के टुकड़े

और मूंगफली भूनें। अब साबूदाना,

संघा नमक और काली मिर्च

डालकर धीमी आंच पर पकाएं। अंत

में नींबू का रस डालें।

3. बुधवार: बेसन का चीला

\* विधि: बेसन में बारीक कटा

प्याज, टमाटर, हरी मिर्च, अदरक,

नमक और अजवाइन मिलाएं। पानी

डालकर गाढ़ा घोल तैयार करें। गरम

तवे पर थोड़ा तेल लगाकर घोल को

फैलाएं और दोनों तरफ से सुनहरा

होने तक सेंकें।

4. गुरुवार: उपमा

\* विधि: सूजी (रवा) को हल्का

भून लें। कड़ाही में तेल/घी गरम कर

राई, उड़द दाल, कड़ी पत्ता, प्याज

और अपनी पसंद की सब्जियां भूनें।

पानी डालें, उसमें नमक और भुनी

सूजी धीरे-धीरे डालकर गाढ़ा होने

तक पकाएं।

5. शुक्रवार: ढोकला

\* विधि: बेसन, दही, अदरक-

मिर्च पेस्ट और हल्दी का घोल

बनाएं। अंत में ईन्डो डालकर मिलाएं

और स्टीमर में 15-20 मिनट

पकाएं। ऊपर से राई, करी पत्ता और

मिर्च वाले पानी का तड़का लगाएं।

6. शनिवार: मसाला डोसा

\* विधि: चावल और उड़द दाल

के घोल (बैटर) को तवे पर पतला

फैलाएं। जब यह क्रिस्पी होने लगे,

तब बीच में उबले हुए आलू का

चटपटा मसाला रखें और फोल्ड

करके नारियल चटनी के साथ

परोसें।

7. रविवार: आलू का पराठा

\* विधि: उबले हुए आलू में

प्याज, हरी मिर्च, हरा धनिया और

मसाले मिलाकर स्टेफिंग तैयार करें।

गेहूं के आटे की लोई में आलू भरकर

बेल लें और तवे पर घी या मक्खन

लगाकर दोनों तरफ से अच्छे से

सेकें।

## चंडीपुरा वायरस: कारण, लक्षण और बचाव के उपाय



चंडीपुरा वायरस (CHPV)

तेजी से फैलने वाली एक गंभीर

न्यूरोलॉजिकल बीमारी है, जो

मुख्य रूप से बच्चों को प्रभावित

करती है। इसके लक्षणों में अचानक

तेज बुखार, दौरे पड़ना, सिरदर्द और

उल्टी शामिल हैं, और अक्सर 48

घंटों के भीतर मरीज कोमा में चला

जाता है या उसकी मृत्यु हो जाती है।

यह मच्छरों या सैंडफ्लाई (एक

प्रकार की मक्खी) से फैलने वाली

एक दुर्लभ बीमारी है, जिससे

एन्सेफलाइटिस हो सकता है और

इसके लिए तुरंत गहन चिकित्सा की

आवश्यकता होती है।

मुख्य लक्षण और

क्लिनिकल स्थिति

शुरुआती लक्षण: अचानक और

तेज बुखार इसका सबसे आम

लक्षण है, जिसके साथ अक्सर

गंभीर सिरदर्द भी होता है।

न्यूरोलॉजिकल जटिलताएँ:

तेजी से भ्रम, भटकाव, दौरे पड़ना

(मिर्गा जैसे), उनींदापन और

चेतना में बदलाव आना।

गंभीर लक्षण: बार-बार उल्टी

होना, कोमा में जाना, और कभी-

कभी जानलेवा एन्सेफलाइटिस के

लक्षण (दिमाग में सूजन) दिखाई

देना।

अन्य लक्षण: कुछ मामलों में

दस्त, खांसी, या निमोनिया और

एक्यूट रेस्पिरटरी डिस्ट्रेस सिंड्रोम

(ARDS) के लक्षण भी दिखाई

देते हैं।

बीमारी का बढ़ना: यह बीमारी

बहुत तेजी से बढ़ती है; शुरुआती

लक्षणों के बाद अक्सर 24 से 48

घंटों के भीतर ही मरीज कोमा में

चला जाता है या उसकी मृत्यु हो

जाती है।

प्रभावित आबादी और

संक्रमण का फैलाव

सबसे ज्यादा जोखिम: यह

वायरस मुख्य रूप से 2 से 16 साल

की उम्र के बच्चों को प्रभावित करता

है, हालांकि यह किसी भी उम्र के

व्यक्ति को हो सकता है।

संक्रमण का फैलाव: गणेश

डायग्नोस्टिक के अनुसार, यह

बीमारी संक्रमित मादा

फ्लेबोटोमाइन सैंडफ्लाई (एक

प्रकार की मक्खी) के काटने से

फैलती है।

निदान और उपचार

निदान: इसकी पुष्टि लैब टेस्ट

के जरिए की जाती है। इनमें RT-

PCR टेस्ट शामिल है, जिससे खून

या सेरेब्रोस्पॉइनल फ्लूइड (CSF)

में वायरस का RNA पता लगाया

जाता है; साथ ही एंटीबॉडी टेस्ट भी

किए जाते हैं, जैसा कि 'एशियन

जर्नल ऑफ रिसेच इन

इन्फेक्शियस डिजीजेज' में बताया

गया है।

उपचार: इस बीमारी के लिए

कोई विशेष एंटीवायरल दवा

उपलब्ध नहीं है; इसका उपचार

मुख्य रूप से दिमाग की सूजन को

कम करने और मरीज को गहन

चिकित्सा (ICU) में रखने पर

केंद्रित होता है।

# Helicobacter pylori और पेट के कैंसर का संबंध

Helicobacter pylori (H. pylori) एक प्रकार का जीवाणु है जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization) की कैंसर अनुसंधान एजेंसी International Agency for Research on Cancer (IARC) द्वारा "Class-1 Carcinogen" अर्थात् निश्चित रूप से कैंसर उत्पन्न करने वाला कारक घोषित किया गया है।

इसका तात्पर्य यह है कि यह जीवाणु पेट के कैंसर (Gastric Cancer) के प्रमुख कारणों में से एक माना जाता है।

H. pylori से कैंसर कैसे विकसित हो सकता है

यह प्रक्रिया अचानक नहीं होती, बल्कि कई वर्षों में धीरे-धीरे विकसित होती है। सामान्यतः यह निम्न चरणों से होकर गुजरती है:

1. Chronic Gastritis (दीर्घकालिक गैस्ट्राइटिस)

H. pylori पेट की भीतरी परत में लगातार सूजन उत्पन्न करता है।

2. Atrophic Gastritis (एट्रोफिक गैस्ट्राइटिस)

लंबे समय तक बनी रहने वाली सूजन के कारण पेट की सामान्य कोशिकाएँ कमजोर और क्षतिग्रस्त होने लगती हैं।

3. Intestinal Metaplasia (आंत जैसी कोशिकाओं में परिवर्तन)

समय के साथ पेट की कोशिकाएँ आंत की कोशिकाओं के समान रूप धारण करने लगती हैं।

4. Dysplasia (असामान्य कोशिकीय परिवर्तन)

कोशिकाओं की संरचना और कार्य में असामान्य परिवर्तन होने लगते हैं।

5. Gastric Cancer (पेट का कैंसर)

कुछ मामलों में अंततः यही परिवर्तन पेट के कैंसर में परिवर्तित हो सकते हैं।

यह पूरी प्रक्रिया सामान्यतः 10 से 30 वर्षों के दौरान धीरे-धीरे विकसित होती है।

किन लोगों में जोखिम अधिक होता है

निम्न परिस्थितियों में H. pylori से संबंधित जटिलताओं का जोखिम अधिक देखा

गया है:

\* लंबे समय से H. pylori संक्रमण

\* अत्यधिक नमकीन एवं प्रोसेस्ड खाद्य

पदार्थों का सेवन

\* दूषित पानी से बने होटल या बाहर के

भोजन का नियमित सेवन

\* धूम्रपान

शराब का सेवन

\* कोल्ड ड्रिंक्स का सेवन

\* बार-बार होने वाला पेटिक अल्सर

\* परिवार में पेट के कैंसर का इतिहास

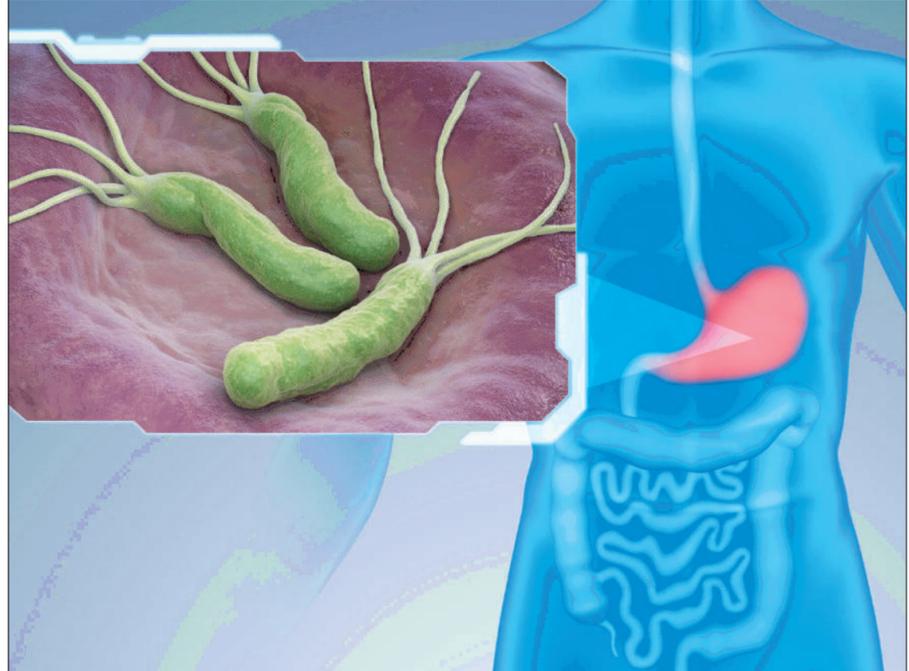
भारत जैसे देशों में स्वच्छता की कमी और

दूषित पानी के कारण इस संक्रमण की दर

अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है।

H. pylori के नियंत्रण में सहायक प्राकृतिक खाद्य

कुछ प्राकृतिक खाद्य पदार्थों में ऐसे तत्व



भारत के अनेक शहरों और कस्बों में किए गए विभिन्न अध्ययनों में यह पाया गया है बहुत बार पानी-पूरी (गोलगप्पे) या अन्य सड़क किनारे के खाद्य पदार्थ बेचने वाले ठेलों तथा फूड स्टॉलों में उपयोग किया जाने वाला पानी पर्याप्त रूप से स्वच्छ नहीं होता। ऐसी परिस्थितियों में उस पानी में H. pylori सहित विभिन्न रोगजनक सूक्ष्मजीवों की उपस्थिति की संभावना बनी रहती है।

पाए गए हैं जो H. pylori की वृद्धि को कम करने में सहायक हो सकते हैं:

\* ब्रोकोली (विशेषकर इसके स्प्राउट्स)

\* लहसुन

\* हल्दी

\* ग्रीन टी

\* दही (प्रोबायोटिक्स)

महत्वपूर्ण सावधानी:

ये खाद्य पदार्थ मुख्य चिकित्सा उपचार का

विकल्प नहीं हैं, बल्कि दवाओं के साथ

सहायक भूमिका निभा सकते हैं।

आधुनिक चिकित्सा में उपचार

H. pylori संक्रमण को समाप्त करने

के लिए डॉक्टर सामान्यतः Triple

Therapy या Quadruple Therapy

का उपयोग करते हैं, जिसमें एंटीबायोटिक

दवाएँ तथा पेट के अम्ल को कम करने वाली

दवाएँ शामिल होती हैं।

यह उपचार सामान्यतः 10 से 14 दिनों

तक चलता है और अधिकांश मामलों में

संक्रमण को समाप्त करने में प्रभावी सिद्ध

होता है।

एक महत्वपूर्ण तथ्य

विश्व की लगभग 50-60% आबादी में

H. pylori पाया जाता है, किंतु सभी

संक्रमित व्यक्तियों में पेट का कैंसर विकसित

नहीं होता।

यदि संक्रमण की समय पर पहचान और

उचित उपचार किया जाए, तो

पेट के कैंसर के जोखिम को काफी हद

तक कम किया जा सकता है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य की दृष्टि से

महत्वपूर्ण सावधानी

भारत के अनेक शहरों और कस्बों में किए गए

विभिन्न अध्ययनों में यह पाया गया है बहुत बार

पानी-पूरी (गोलगप्पे) या अन्य सड़क किनारे के

खाद्य पदार्थ बेचने वाले ठेलों तथा फूड स्टॉलों में

उपयोग किया जाने वाला पानी पर

# धर्म अध्यात्म



## साप्ताहिकी अंकशास्त्र



**डॉ. पूजाप्रसून एन**  
गोल्ड मेडलिस्ट  
Shivoham Shastr  
shivohamshastr.com  
09599101326, 07303855446

### भावनाएँ, अंतर्ज्ञान, मन और संवेदनशीलता:

अंक ज्योतिष में अंक 2 का स्वामी चंद्रमा (चंद्र) होता है। चंद्रमा मन, भावनाएँ, अंतर्ज्ञान, कल्पना, संवेदनशीलता, पालन-पोषण की भावना और आंतरिक शांति का प्रतिनिधित्व करता है। जहाँ सूर्य आत्मा और अधिकार का प्रतीक है, वहीं चंद्रमा व्यक्ति के मानसिक संसार और भावनात्मक संतुलन को नियंत्रित करता है।

जिस प्रकार चंद्रमा सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करता है और पृथ्वी पर ज्वार-भाटा को प्रभावित करता है, उसी प्रकार यह मनुष्य के भीतर की भावनात्मक तरंगों को भी प्रभावित करता है।

अंक 2 से प्रभावित लोग अक्सर कोमल, कलात्मक, सहानुभूतिपूर्ण और अंतर्ज्ञानी स्वभाव के होते हैं।

अंक 2 में सहयोग, कूटनीति, सामंजस्य और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का कंपन होता है। यह साझेदारी, संतुलन और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता का प्रतीक है।

जो लोग किसी भी महाने की 2, 11, 20 या 29 तारीख को जन्म लेते हैं, या जिनका भाग्यंक (Destiny Number) 2 होता है, वे चंद्रमा की ऊर्जा से अत्यधिक प्रभावित होते हैं।

### अंक 2 का सकारात्मक प्रभाव (मजबूत चंद्रमा):

जब चंद्रमा किसी व्यक्ति के अंक ज्योतिष या जीवन ऊर्जा में मजबूत और संतुलित होता है, तो वह व्यक्ति को कई सुंदर गुणों से आशीर्वाद देता है।

**1. मजबूत अंतर्ज्ञान**  
अंक 2 वाले लोगों में अक्सर शक्तिशाली अंतर्ज्ञान होता है। वे बिना सीधे जानकारी के भी भावनाओं, परिस्थितियों और ऊर्जाओं को महसूस कर सकते हैं।

**2. भावनात्मक बुद्धिमत्ता**  
मजबूत चंद्रमा व्यक्ति को भावनाओं को गहराई से समझने की क्षमता देता है—चाहे वे अपनी ही या दूसरों की।

**3. रचनात्मकता, कल्पना और**

### नियमित धन प्रवाह

चंद्र ऊर्जा का गहरा संबंध कला, कविता, संगीत, लेखन और रचनात्मकता से है। अनेक कलाकार और लेखक इस ऊर्जा से प्रभावित होते हैं।

चंद्रमा नियमित आय (Regular Income) और नकदी प्रवाह (Liquid Cash Flow) के लिए भी जिम्मेदार माना जाता है।

**4. करुणा और दयालुता**  
मजबूत चंद्र ऊर्जा वाले लोग सामान्यतः कोमल, दयालु और दूसरों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण होते हैं।

**5. कूटनीतिक स्वभाव**  
वे रिश्तों में सामंजस्य बनाए रखने में कुशल होते हैं और अक्सर मध्यस्थ या शांति स्थापित करने वाले बनते हैं।

**6. आध्यात्मिक संवेदनशीलता**  
संतुलित चंद्रमा व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से जागरूक और भावनात्मक रूप से परिपक्व बना सकता है। ऐसे लोग ध्यान, हीलिंग और आंतरिक विकास में रुचि रखते हैं।

### अंक 2 के नकारात्मक प्रभाव (कमजोर या पीड़ित चंद्रमा):

जब चंद्रमा कमजोर, अस्थिर या नकारात्मक रूप से सक्रिय हो जाता है, तो यह व्यक्ति के मानसिक और भावनात्मक संतुलन को प्रभावित कर सकता है।

**1. भावनात्मक अस्थिरता**  
व्यक्ति को बार-बार मूड बदलना, उदासी या अत्यधिक भावुकता अनुभव हो सकती है।

**2. चिंता और अधिक सोच**  
कमजोर चंद्रमा अक्सर लगातार चिंता, डर और अत्यधिक सोच पैदा करता है।

**3. आत्मविश्वास की कमी**  
ऐसे व्यक्ति स्वयं पर संदेह कर सकते हैं और निर्णय लेने में हिचकिया सकते हैं।

**4. दूसरों पर निर्भरता**  
वे भावनात्मक रूप से दूसरों के सहारे पर अधिक निर्भर हो सकते हैं और अपनी आंतरिक शक्ति खो सकते हैं।

**5. मानसिक शांति की कमी**  
पीड़ित चंद्र ऊर्जा बेचैनी, अनिद्रा और मानसिक थकान पैदा कर सकती है।

**6. स्वास्थ्य समस्याएँ**  
चंद्रमा शरीर के निम्न भागों का संचालन करता है:

मन और मस्तिष्क  
रक्त तरल पदार्थ  
पेट और पाचन  
हार्मोन संतुलन

भावनात्मक तंत्रिका तंत्र  
जब चंद्रमा पीड़ित होता है, तो यह समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं:

तनाव और चिंता

### रिश्तों में समस्याएँ

नींद की समस्या  
पाचन संबंधी समस्याएँ  
अवसाद या भावनात्मक असंतुलन  
हार्मोनल असंतुलन

### संकेत कि चंद्रमा (अंक 2 की ऊर्जा) नकारात्मक प्रभाव दे रहा है:

जीवन में कुछ दोहराने वाले संकेत यह दर्शा सकते हैं कि चंद्रमा संतुलित नहीं है।  
1. माता से संबंधित समस्याएँ और प्रेम संबंधों में कठिनाई

चंद्रमा माता और मातृ पोषण का प्रतिनिधित्व करता है। कमजोर चंद्रमा के कारण:

माँ से भावनात्मक दूरी  
माँ का स्वास्थ्य खराब होना  
परिवार से भावनात्मक सहयोग की कमी।

यह प्रेम संबंधों का भी प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए कमजोर चंद्रमा रिलेशनशिप में समस्याएँ भी उत्पन्न कर सकता है।

**2. लगातार मूड बदलना**  
बिना स्पष्ट कारण के बार-बार भावनात्मक उतार-चढ़ाव होना।

**3. मानसिक स्थिरता की कमी**  
एकाग्रता में कठिनाई, अत्यधिक कल्पना या भ्रम।

**4. भय और असुरक्षा**  
जीवन के निर्णयों के बारे में असुरक्षित या भयभीत महसूस करना।

**5. नींद से संबंधित समस्याएँ**  
अनिद्रा, बेचैन नींद या परेशान करने वाले सपने।

**6. भावनात्मक निर्भरता**  
दूसरों के आश्रय के बिना भावनात्मक रूप से मजबूत न रह पाना।

**7. कमजोर व्यक्तिगत आभा**  
व्यक्ति मानसिक रूप से थका हुआ और भावनात्मक रूप से कमजोर महसूस कर सकता है।

**जब चंद्रमा अत्यधिक मजबूत हो:**  
दिलचस्प बात यह है कि अत्यधिक मजबूत चंद्रमा भी चुनौतियाँ पैदा कर सकता है।

**इसके संकेत हो सकते हैं:**  
अत्यधिक भावनात्मक संवेदनशीलता, लोगों से अत्यधिक लगाव, कल्पनाओं या दिवास्वप्न में खो जाना, व्यावहारिकता की कमी, भावनात्मक कमजोरी, इसलिए चंद्र ऊर्जा के लिए भी संतुलन अत्यंत आवश्यक है।

**चंद्रमा को मजबूत और संतुलित करने के उपाय**  
चंद्र ऊर्जा को आध्यात्मिक साधना, जीवनशैली में परिवर्तन और ऊर्जात्मक



उपायों के माध्यम से संतुलित किया जा सकता है।

**1. चंद्र अर्घ्य**  
सोमवार की शाम या पूर्णिमा (पूर्ण चंद्र) के दिन चंद्रमा को देखें और जल या दूध में चावल मिलाकर अर्घ्य दें।

यह अभ्यास मन को शांत करता है और चंद्र ऊर्जा को मजबूत बनाता है।

**2. चंद्रमंत्र**  
चंद्र मंत्र का जाप मानसिक और भावनात्मक ऊर्जा को स्थिर करता है।

**मंत्र:**  
“ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः”  
इसे प्रतिदिन 108 बार, विशेषकर सोमवार को जपना बहुत लाभकारी होता है।

**3. भगवान शिव की उपासना**  
चंद्रमा भगवान शिव के मस्तक पर स्थित है।

इसलिए शिवलिंग पर जल या दूध अर्पित करना, शिव चालीसा का पाठ करना, ॐ नमः शिवाय का जप करना, चंद्र ऊर्जा को अत्यंत संतुलित करता है।

**4. माता का सम्मान और सेवा**  
क्योंकि चंद्रमा माता का प्रतिनिधित्व करता है:

माता का सम्मान करें  
उनका आशीर्वाद लें  
मातृ स्वरूप स्त्रियों की सहायता करें  
इससे चंद्र ऊर्जा अत्यधिक

सकारात्मक हो जाती है।

**5. मोती (Pearl) या मूनस्टोन धारण करें**  
मोती चंद्रमा का रत्न है और मूनस्टोन उसका क्रिस्टल माना जाता है।

**6. चंद्र ऊर्जा से चार्ज किया हुआ जल पिएँ**  
पूर्णिमा की रात 3-4 घंटे के लिए पीने के पानी को चाँदी में रखें, फिर उसे सुरक्षित रखकर प्रतिदिन पिएँ।

**लाभ:**  
भावनाएँ शांत होती हैं  
मानसिक स्थिरता बढ़ती है  
अंतर्ज्ञान मजबूत होता है  
भावनात्मक संतुलन आता है  
मोती को सामान्यतः सोमवार को चाँदी में कनिष्ठा उंगली में धारण किया जाता है।

मूनस्टोन का ब्रेसलेट भावनात्मक हीलिंग के लिए पहना जा सकता है।

**7. जल के पास समय बिताएँ**  
चंद्रमा जल तत्व का स्वामी है। इसलिए:

नदियों के पास  
नदियों के पास  
समुद्र के किनारे  
समय बिताना मन को स्वाभाविक रूप से शांत करता है।

**8. ध्यान का अभ्यास**  
ध्यान चंद्र ऊर्जा को संतुलित करने के लिए अत्यंत प्रभावशाली है क्योंकि यह मन को स्थिर करता है।

नियमित ध्यान से:  
चिंता कम होती है

भावनात्मक अशांति घटती है  
मानसिक स्पष्टता बढ़ती है।

**9. सोमवार को दान**  
चंद्रमा से संबंधित वस्तुओं का दान करने से उसके कर्म संतुलित होते हैं।

दान करें:  
चावल  
दूध  
सफेद वस्त्र  
चिनी

विशेष रूप से सोमवार के दिन।  
**10. चंद्रमा के रंगों का उपयोग**  
चंद्रमा से जुड़े रंग हैं:

सफेद  
चाँदी जैसा रंग  
हल्का नीला  
इन रंगों का उपयोग करने से चंद्र ऊर्जा मजबूत होती है।

**11. भावनात्मक संतुलन विकसित करें:**  
भावनात्मक स्थिरता विकसित करना चंद्र ऊर्जा को मजबूत करने के लिए आवश्यक है।

**अभ्यास करें:**  
अपने विचार लिखना (जर्नलिंग)  
भावनात्मक जागरूकता  
आत्म-देखभाल की आदतें  
स्वस्थ रिश्ते बनाना

**अंक 2 का आध्यात्मिक अर्थ:**  
सांसारिक प्रभावों से परे, चंद्रमा आंतरिक मन और भावनात्मक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है।

इसका गहरा संदेश है:

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आंतरिक सामंजस्य।  
संतुलित चंद्रमा व्यक्ति को ऐसा बनाता है जो:

भावनाओं को गहराई से समझता है  
दूसरों का पोषण और समर्थन करता है  
गहरी अंतर्ज्ञान शक्ति रखता है  
भावनात्मक सामंजस्य के साथ जीवन जीता है।

**निष्कर्ष:**  
अंक 2 (चंद्रमा) अंक ज्योतिष की सबसे कोमल और शक्तिशाली ऊर्जाओं में से एक है।

यह मन, भावनाएँ, अंतर्ज्ञान, कल्पना, नियमित नकदी प्रवाह और संबंधों को नियंत्रित करता है।

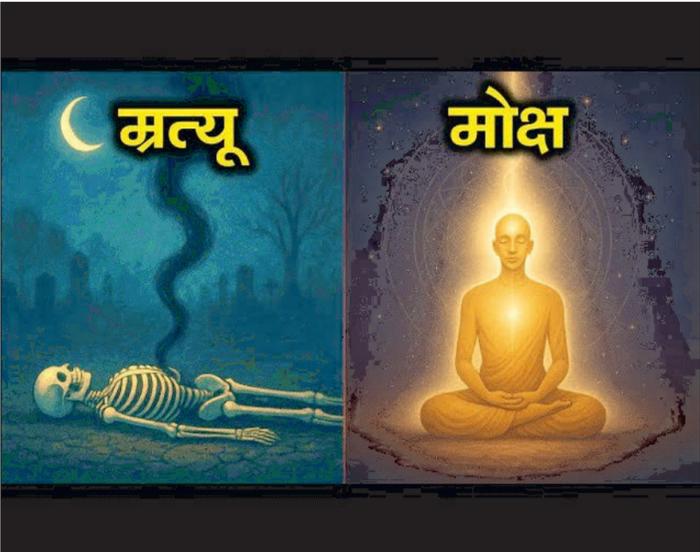
जब यह संतुलित होता है, तो यह करुणा, अंतर्ज्ञानी और रचनात्मक व्यक्ति बनाता है जो संसार में सामंजस्य लाते हैं।

जब यह असंतुलित होता है, तो यह भावनात्मक अस्थिरता, चिंता और मानसिक अशांति पैदा कर सकता है।

लेकिन आध्यात्मिक साधना, अनुशासित जीवनशैली, भावनात्मक जागरूकता और उचित उपायों के माध्यम से चंद्रमा की ऊर्जा को हमेशा संतुलित किया जा सकता है।

जब किसी व्यक्ति के जीवन में चंद्रमा शांत और उज्वल रूप से चमकता है, तो वह शांति, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और गहरी आंतरिक शांति प्रदान करता है।

## समाधि और मृत्यु के बीच की स्पष्ट अंतर



पिकी कुंहु

साधारण दृष्टि में श्वास केवल हवा का आना-जाना है, लेकिन योग और अध्यात्म में श्वास ही 'प्राण' का वाहन है। इस आवागमन के रुकने के दो अलग-अलग अर्थ होते हैं, जो मनुष्य की नियति को पूरी तरह बदल देते हैं।

**1. मृत्यु: जब द्वार बंद हो जाए**  
जब शरीर की शक्ति क्षीण हो जाती है और श्वास बाहर की ओर प्रवाहित होकर पुनः भीतर की ओर नहीं लौट पाती, तो उसे मृत्यु कहा जाता है।

\* यह एक अनिवार्य घटना है, जो प्रकृति के नियम के अधीन है।  
\* यहाँ जीव विवाश है, शरीर थक चुका है और प्राण अब इस पुराने

घर को छोड़कर बाहर निकल गए हैं।  
\* यह 'छूट जाना' है, जहाँ चेतना का भौतिक शरीर से संबंध विच्छेद हो जाता है।

**2. समाधि: जब गति विश्राम बन जाए**  
इसके विपरीत, जब वही श्वास बाहर जाने के बजाय भीतर ही ठहर जाए, अपने केंद्र पर पूर्णतः विश्राम पा ले, तो वह समाधि है।

\* यह विवशता नहीं, बल्कि स्वैच्छिक और सजग अवस्था है।  
\* समाधि में श्वास का रुकना मृत्यु नहीं, बल्कि 'कुम्भक' की वह पराकाष्ठा है जहाँ मन पूरी तरह शांत हो जाता है।

\* यहाँ प्राण बाहर नहीं भटकते, बल्कि आत्मा के महासागर में

विलीन हो जाते हैं। इसे ही 'जीवित रहते हुए भी मुक्त हो जाना' कहते हैं।  
**स्थिति श्वास की दिशा अवस्था परिणाम**

मृत्यु बाहर की ओर (बहिर्मुखी) विवशता और अंत पुनर्जन्म का चक्र और आवागमन

समाधि भीतर की ओर (अंतर्मुखी) परम शांति और ठहराव एवं समस्त चक्रों से सदा सदा हेतु मुक्ति

सार: मृत्यु शरीर का अंत है, जबकि समाधि अहंकार का अंत है। मृत्यु में हम 'छीन' लिए जाते हैं, लेकिन समाधि में हम 'स्वयं को पा' लेते हैं। जब श्वास बाहर निकलकर न लौटे तो शरीर शांत होता है, लेकिन जब श्वास भीतर ही ठहर जाए तो संसार शांत हो जाता है।

## वैतरणी नदी: यमलोक के द्वार का वो भयानक रहस्य

पिकी कुंहु

शास्त्रों (गरुड़ पुराण, विष्णु पुराण) के अनुसार, मृत्यु के पश्चात आत्मा की यात्रा केवल अंत नहीं, बल्कि एक कठिन मार्ग की शुरुआत है। इसी मार्ग में नरक और यमलोक की सीमा पर स्थित है—वैतरणी नदी।

कैसी है यह खौफनाक नदी? यह कोई साधारण जलधारा नहीं, बल्कि पापों का हिसाब करने वाली एक अग्नि परीक्षा है:

प्रकृति: इसमें शीतल जल नहीं, बल्कि खोलता हुआ रक्त, पीप (pus), और कीचड़ भरा है।

तापमान: इसका 'जल' तेजाब के समान उबलता रहता है, जो अधर्मी आत्माओं को झुलसा देता है।

भयानक जीव: नदी में विशाल साँप, बिच्छू, मगरमच्छ और मांस खाने वाले पक्षी आत्मा को निरंतर कष्ट देते हैं।

इस नदी की लहरों में कौन गिरता है? गरुड़ पुराण स्पष्ट कहता है कि जो अपने जीवनकाल में इन कुकर्मों में लिप्त रहते हैं, उन्हें इस नदी में धकेला जाता है:

1. अनादर: माता-पिता, गुरु और विद्वानों का अपमान करने वाले।

2. अधर्म: झूठ, छल-कपट, विश्वासघात और चोरी करने वाले।

3. पाप: गौ-हत्या, गौ-अपमान या बेसहारा जीवों को सताने वाले।

4. लोभ: सामर्थ्य होते हुए भी दान न करने वाले और संचय की प्रवृत्ति रखने वाले।  
वैतरणी पार करने का एकमात्र सेतु: 'गौदान' जब आत्मा इस भयानक नदी के तट पर थर-थर कांपती है, तब उसके द्वारा जीवन में किए गए निस्वार्थ पुण्य ही काम आते हैं।

महत्व: जिसने श्राद्धपूर्वक 'गौदान' किया होता है, वह गाय स्वयं वहाँ प्रकट होकर उस आत्मा को अपनी पूंछ के सहारे इस दुर्गम नदी से पार करा देती है।

वैतरणी दान की महिमा मृत्यु के समय या श्राद्ध पक्ष में किए जाने वाले इस दान का विशेष विधान है:

#मुख्य सामग्री: काली गाय (या प्रतीकात्मक), तिल, लोहा, कंबल, जल पात्र और अन्न।

भाव: यह दान आत्मा की दुर्गति को रोककर उसे सद्गति की ओर ले जाता है।

आध्यात्मिक संदेश: बचाव का मार्ग वैतरणी नदी केवल भय पैदा करने के लिए नहीं, बल्कि हमें जागृत करने के लिए है। इससे बचने का मार्ग आज और अभी से शुरू होता है:

1. सत्य का आचरण करें।

2. करुणा और परोपकार को अपनाएं।

3. गौ-सेवा और धर्म के मार्ग पर चलें।



Sudhir Arya  
Chlo gurukul ki or

# घरेलू गैस की कालाबाजारी रोकने के लिए खाद्य आपूर्ति विभाग का चैकिंग अभियान जारी

खाद्य आपूर्ति विभाग की टीम ने शहर में लगभग एक दर्जन दुकानों का किया निरीक्षण



परिवहन विशेष न्यूज

**झज्जर, 15 मार्च** | जिला मुख्यालय पर घरेलू गैस की कालाबाजारी रोकने तथा आम उपभोक्ताओं तक एलपीजी गैस की सुगम उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल के निर्देशानुसार खाद्य एवं आपूर्ति विभाग द्वारा लगातार चैकिंग अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में रविवार को सहायक

खाद्य आपूर्ति अधिकारी (एफएसओ) अमरजीत सिंह के नेतृत्व में विभाग की टीम ने शहर के विभिन्न प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान टीम ने लगभग एक दर्जन प्रतिष्ठानों और मिष्ठान भंडार की दुकानों की जांच की। चैकिंग के दौरान गैस सिलेंडरों के उपयोग, रजिस्टर और स्टॉक का भी अवलोकन किया गया। टीम

द्वारा की गई जांच में किसी भी प्रतिष्ठान पर घरेलू गैस सिलेंडरों के दुरुपयोग अथवा अन्य प्रकार की अनियमितता सामने नहीं आई। एफएसओ अमरजीत सिंह ने बताया कि सरकार और जिला प्रशासन के निर्देशानुसार घरेलू गैस की कालाबाजारी रोकने के लिए नियमित रूप से चैकिंग अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि घरेलू गैस सिलेंडर केवल घरेलू

उपयोग के लिए निर्धारित हैं और इनका व्यावसायिक उपयोग करना नियमों के विरुद्ध है। यदि किसी प्रतिष्ठान पर घरेलू गैस सिलेंडरों का व्यावसायिक उपयोग करते पाया गया तो उसके खिलाफ नियमानुसार कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए विभाग पूरी तरह सतर्क है और भविष्य में भी

इसी प्रकार अचानक निरीक्षण किए जाते रहेंगे। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि एलपीजी गैस की आपूर्ति सुचारु रूप से आम उपभोक्ताओं तक पहुंचे और किसी भी प्रकार की कालाबाजारी को रोका जा सके। इस निरीक्षण अभियान में निरीक्षक रंजन यादव, अजय राठी तथा उपनिरीक्षक अजय कबलाना भी शामिल रहे।

# जन समस्याओं के समाधान के लिए आज लगेंगे समाधान शिविर

जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में सुबह 10 से 12 बजे तक आयोजित होंगे शिविर : डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल

परिवहन विशेष न्यूज

**झज्जर, 15 मार्च** | आमजन की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी समाधान के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा आज (16 मार्च सोमवार को) जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। ये शिविर प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक लगाए जाएंगे, जहां नागरिकों की शिकायतें सुनकर उनका मौके पर ही निपटान सुनिश्चित किया जाएगा।

जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन लघु सचिवालय, झज्जर के कॉन्फ्रेंस हॉल में किया जाएगा, जिसकी अध्यक्षता उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल करेंगे। इस दौरान उपायुक्त विभिन्न विभागों से संबंधित शिकायतें सुनेंगे तथा उपस्थित अधिकारियों को समस्याओं के समयबद्ध समाधान के निर्देश देंगे, ताकि आमजन को अनावश्यक भागदौड़ से राहत मिल सके। उपमंडल स्तर पर भी संबंधित



लघु सचिवालय परिसरों में समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच, बेरी में एसडीएम रेणुका नांदल तथा बादली में एसडीएम डॉ. रमन गुप्ता की अध्यक्षता में शिविर लगाए जाएंगे। इन शिविरों में प्राप्त शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निपटान किया जाएगा। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल

ने कहा कि समाधान शिविर प्रशासन और नागरिकों के बीच सीधे संवाद का सशक्त माध्यम है। उन्होंने बताया कि जिला मुख्यालय में समाधान शिविर नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं, जिनमें विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहते हैं, ताकि लोगों को एक ही स्थान पर उनकी समस्याओं का शीघ्र समाधान मिल सके।

# सामान खरीदते समय दुकानदार से पक्का बिल अवश्य लें : डीएफएससी

ऑनलाइन खरीदारी के दौरान सावधानी बरतने की दी सलाह

जिलाभर में विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

**झज्जर, 15 मार्च** | डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल के मार्गदर्शन में रविवार को जिला खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग द्वारा 'विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस' पर जिले भर में व्यापक जागरूकता अभियान चलाया गया। "सुरक्षित उत्पाद, आत्मविश्वासी उपभोक्ता" थीम के तहत आयोजित इस अभियान का उद्देश्य उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना तथा बाजार में होने वाली धोखाधड़ी से बचाव के बारे में जानकारी देना रहा।

जिला खाद्य एवं पूर्ति नियंत्रक (डीएफएससी) राजेश्वर मुदगिल ने बताया कि पीआर सेंटर में जिला स्तरीय उपभोक्ता दिवस कार्यक्रम का आयोजन सहायक खाद्य एवं पूर्ति अधिकारी कार्यालय झज्जर में किया गया। उन्होंने बताया कि जिला मुख्यालय के साथ-साथ ब्लॉक स्तर पर भी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। विभाग की टीमों ने बेरी, मातनहेल, बादली और बहादुरगढ़ के सार्वजनिक स्थानों तथा अनाज मंडियों में जागरूकता शिविरों

का आयोजन कर लोगों को उपभोक्ता अधिकारों की जानकारी दी। इन कार्यक्रमों के दौरान लोगों को जागरूक करते हुए "जागो ग्राहक जागो" का नारा भी बुलंद किया गया।

डीएफएससी राजेश्वर मुदगिल ने बताया कि झज्जर जिले में उपभोक्ता अब पहले की तुलना में अधिक जागरूक हो रहे हैं, जो एक सकारात्मक संकेत है। उन्होंने उपभोक्ताओं को उनके छह मौलिक अधिकारों—सुरक्षा का अधिकार, सूचना का अधिकार, चयन का अधिकार, सुनवाई का अधिकार, निवारण का अधिकार और उपभोक्ता शिक्षा के अधिकार—के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इन अधिकारों की जानकारी होने से उपभोक्ता किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी या अनियमितता के खिलाफ प्रभावी कदम उठा सकते हैं। उन्होंने नागरिकों को विशेष रूप से ऑनलाइन खरीदारी के दौरान सावधानी बरतने की सलाह देते हुए कहा कि शहरी क्षेत्रों में ई-कॉमर्स के माध्यम से होने वाली धोखाधड़ी को रोकने के लिए लोगों को सतर्क रहना चाहिए। किसी भी ऑनलाइन लेनदेन



से पहले वेबसाइट की विश्वसनीयता की जांच करना आवश्यक है। डीएफएससी ने झज्जर जिले के उपभोक्ताओं को सलाह देते हुए कहा कि किसी भी प्रकार का सामान खरीदते समय दुकानदार से पक्का बिल अवश्य लें, क्योंकि बिल उपभोक्ता का सबसे महत्वपूर्ण अधिकार और शिकायत के समय सबसे मजबूत प्रमाण होता है। इसके अलावा मिठाई, खाद्य पदार्थ या अन्य वस्तुएं खरीदते समय हमेशा आईएसआई, एगमार्क या एफएसएसएआई जैसे गुणवत्ता

प्रमाण चिह्न अवश्य देखें। उन्होंने बताया कि यदि किसी उपभोक्ता को किसी प्रकार की ठगी, ओवरचार्जिंग या गलत तौल जैसी समस्या का सामना करना पड़ता है तो वह विभाग की वेबसाइट या राज्य हेल्पलाइन नंबर 1800-180-2087 तथा जिला कार्यालय के संपर्क नंबर 01251-252516 पर शिकायत दर्ज कर सकता है। विभाग द्वारा ऐसी शिकायतों का त्वरित निवारण सुनिश्चित किया जाता है। उन्होंने कहा कि उपभोक्ताओं को जागरूक बनाना ही इस दिवस को

मनाने का मुख्य उद्देश्य है, ताकि हर नागरिक अपने अधिकारों को समझे और बाजार में किसी भी प्रकार की अनियमितता के खिलाफ आवाज उठा सके। इस अवसर पर जिला खाद्य एवं पूर्ति अधिकारी आदित्य कौशिक, सहायक खाद्य एवं पूर्ति अधिकारी अमरजीत सिंह, सपना, निरीक्षक अजय राठी, रंजन यादव, सुमित हुड्डा, जयदीप तथा उपनिरीक्षक ऋतु, अजय, श्रीकांत और धर्मपाल सहित विभाग के अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

# बरवाला में साहब कांशीराम जी की जयंती पर विचार गोष्ठी कार्यक्रम आयोजित



दिसार/हरियाणा (नरेश गुणपाल)

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जागृति मिशन, खंड बरवाला जिला दिसार की ओर से आज कुम्हार धर्मशाला बरवाला में बहुजन समाज के महान समज सुधारक एवं बहुजन आंदोलन के अग्रणी नेता साहब कांशीराम जी की जयंती के उपलक्ष्य में एक विचार गोष्ठी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर साहब कांशीराम जी के सहयोगी रहे समाजसेवी नरसिंह दास सेलवाल उपस्थित रहे। उन्होंने अपने संबोधन में साहब

कांशीराम जी के संघर्षपूर्ण जीवन और बहुजन समाज को जागरूक एवं संगठित करने में उनके योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि साहब कांशीराम जी ने अपना पूरा जीवन समाज के कमजोर वर्गों को अधिकार दिलाने के लिए समर्पित कर दिया और आज भी उनके विचार समाज को दिशा देने का काम कर रहे हैं। इस अवसर पर लघु बाँट कर खुशियाँ मनाई गईं और मुख्यअतिथि नरसिंह दास सेलवाल को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मुख्य रूप से राजसिंह बौद्ध, अवतार भारतीय, मनजीत गुणपाल, सुरेंद्र सिल्ले, रोहताश राजनी, सरदानंद जारली, मास्टर मोहन सिंह, रमेश छाछिया, राजेश सरसौद, ऋषि खरकड़ा, बसाऊ राम सिंहमर सहित अनेक सामाजिक कार्यकर्ता और गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी गणमान्य साधियों ने साहब कांशीराम जी के बताए रास्ते पर चलने और समाज में शिक्षा, संपन्न और संघर्ष के सिद्धांतों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

# जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति को सम्मान, बराबरी और न्याय नहीं मिल जाता, तब तक साहब कांशीराम का मिशन अधूरा - अधिवक्ता सुनीता कल्सन

बहुजन नायक मान्यवर कांशीराम जी की जयंती के अवसर पर उनके महान संघर्ष, त्याग और सामाजिक-राजनीतिक योगदान को श्रद्धा और सम्मान के साथ आज उनको याद किया जा रहा है - अधिवक्ता सुनीता कल्सन

**चण्डीगढ़:** बार काउंसिल ऑफ पंजाब एंड हरियाणा की सशक्त उम्मीदवार व कोऑर्डिनेटर, नेशनल अलायंस फॉर दलित ह्यूमन राइट्स, अधिवक्ता सुनीता कल्सन ने कहा कि कांशीराम जी का जीवन केवल एक राजनीतिक यात्रा नहीं था, बल्कि वह सामाजिक परिवर्तन और बहुजन जागरण का एक ऐतिहासिक आंदोलन था।

उन्होंने कहा कि कांशीराम जी का जन्म 15 मार्च 1934 को पंजाब के रोपड़ जिले में हुआ था। साधारण परिवार से आने के बावजूद उन्होंने शिक्षा प्राप्त की और सरकारी नौकरी भी की, लेकिन जब उन्होंने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव और अन्याय को देखा तो उन्होंने अपनी नौकरी छोड़कर अपना पूरा जीवन बहुजन समाज के अधिकारों और सम्मान की लड़ाई के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा कि साहब ने समाज को संगठित करने के लिए सबसे पहले बामसेफ (Backward and Minority Communities Employees Federation) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य शिक्षित और नौकरीपेशा बहुजन वर्ग को सामाजिक परिवर्तन के लिए तैयार करना था। इसके बाद उन्होंने बहुजन समाज में व्यापक राजनीतिक जागरूकता पैदा करने के लिए (डी-एस-4) आंदोलन की शुरुआत की,

जिसने देशभर में बहुजन चेतना को मजबूत किया। उन्होंने कहा कि कांशीराम जी का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने बहुजन समाज को यह समझाया कि सामाजिक सम्मान और अधिकार तभी संभव हैं जब बहुजन समाज राजनीतिक रूप से संगठित होकर सत्ता में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करे। इसी उद्देश्य से उन्होंने वर्ष 1984 में बहुजन समाज पार्टी की स्थापना की, जिसने देश की राजनीति में बहुजन समाज की स्वतंत्र और मजबूत पहचान स्थापित की।



उन्होंने कहा कि कांशीराम जी का प्रसिद्ध नारा "जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी" लोकतांत्रिक व्यवस्था में सामाजिक न्याय की भावना को मजबूत करता है। उनका यह भी मानना था कि "राजनीतिक शक्ति ही सभी चावियों की मास्टर चाबी है", जो आज भी बहुजन आंदोलन के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत हैं। उन्होंने कहा कि कांशीराम जी का जीवन त्याग, समर्पण और संघर्ष की मिसाल है। उन्होंने व्यक्तिगत जीवन की सुख-सुविधाओं का त्याग करते हुए अपना पूरा जीवन समाज के मिशन के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने देश के कोने-कोने में जाकर

बहुजन समाज को जागरूक किया और लाखों लोगों को संगठित किया। उन्होंने आगे कहा कि कांशीराम जी की दूरदर्शिता का परिणाम है कि उन्होंने केवल आंदोलन ही नहीं खड़ा किया, बल्कि बहुजन समाज से मजबूत नेतृत्व भी तैयार किया। इसी कड़ी में उन्होंने बहन मायावती जैसे नेतृत्व को आगे बढ़ाया, जिसके परिणामस्वरूप बहुजन समाज को सत्ता में प्रतिनिधित्व मिला।

उन्होंने कहा कि कांशीराम जी की विचारधारा डॉ. भीम राव अंबेडकर के सिद्धांतों से प्रेरित थी। उन्होंने बाबा साहब के "शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो" के संदेश को राजनीतिक आंदोलन का रूप दिया और बहुजन समाज को आत्मसम्मान और अधिकारों के लिए संघर्ष करना सिखाया। अंत में उन्होंने कहा कि कांशीराम जी का जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनकी जयंती पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके मिशन को आगे बढ़ाते हुए सामाजिक न्याय, समानता और संविधान के मूल्यों की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष करते रहेंगे। — अधिवक्ता सुनीता कल्सन कोऑर्डिनेटर, नेशनल अलायंस फॉर दलित ह्यूमन राइट्स

# नागरिक सुरक्षा के वार्डनों ने जलती स्कार्पियो से बचाई जिंदगियां, साहस की मिसाल पेश की

परिवहन विशेष न्यूज

**मथुरा** | धर्मनगरी में रविवार की शाम एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया। औरंगाबाद क्षेत्र में शाम करीब 7:40 बजे एक स्कार्पियो गाड़ी संख्या UP 85 AC 6206 में अचानक इंजन से आग की लपटें उठने लगीं। चलती गाड़ी में आग देख यात्रियों और राहगीरों के हाथ-पांव फूल गए।

इसी बीच देवदूत बनकर पहुंचे नागरिक सुरक्षा कोर के पोस्ट वार्डन अशोक यादव और सेक्टर वार्डन राम सैनी ने अपनी जान जोखिम में डालकर मोर्चा संभाला। दोनों वार्डनों ने फायर ब्रिगेड का इंतजार किए बिना ही स्थानीय लोगों की मदद से पास में मौजूद पानी और मिट्टी का उपयोग कर आग पर प्रहार किया।

कड़ी मशक्कत के बाद आग पर पूरी तरह काबू पा लिया गया। वार्डनों की इस त्वरित सक्रियता के कारण गाड़ी में सवार यात्री सुरक्षित बाहर निकल आए और एक बड़ा विस्फोट होने से बच गया। स्थानीय जनता ने सिविल डिफेंस के इन जांबाजों के साहस और सेवा भाव की जमकर सराहना की है।



**Bhupender Saraswat Sarthi**  
3m · 🌟  
इधर-उधर से.....  
\*ब्रिटेन\*  
-  
विश्व युद्ध था-- चर्चिल ने कहा अंडे मत खरीदो,...  
सैनिकों के लिए है!  
अगले दिन दुकानों के आगे भीड़ थी,...  
अंडे खरीदने के लिए नहीं अंडे वापस करने के लिए हैं!  
भारत-- खाड़ी में युद्ध है, LPG की कमी हो सकती है,  
भाई लोगों ने लाइन लगा दी एक ओर रख लो,...  
निश्चित रहेंगे!  
निष्कर्ष-- \*ब्रिटेन ने इसलिए भारत पर 200,...  
साल राज किया\*!!!!  
⚡⚡⚡⚡⚡⚡

**Bhupender Saraswat Sarthi**  
1m · 🌟  
इधर-उधर से-----  
-  
👍 यह राजनीतिक चमत्कार है या.....?  
-  
एक ही दिन में १४० करोड़ लोगों के सलैंडर...  
एक साथ खाली हो जाते हैं!  
और लोग सड़कों पर उतर जाते हैं।  
-  
"मेरा भारत" वाक्य ही महान है!!  
-  
⚡⚡⚡⚡⚡⚡





# विश्लेषण : तेल के खेल, गैस का दर्द,सियासत और जंग

डॉ. धनश्याम बादल

दुनिया की बड़ी राजनीति अक्सर आम आदमी को छोटी-छोटी जरूरतों पर भारी पड़ती रही है। जब कहीं युद्ध की आहट होती है, तो उसके धमाके केवल सीमाओं पर ही नहीं गूँबते, बल्कि रसीदें के चूल्हों, पेट्रोल पंपों और घर के बजट में भी सुनाई देने लगते हैं। इन दिनों पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव ने एक बार फिर यही सवाल खड़ा कर दिया है कि आखिर वैश्विक ताकतों की जंग का बोझ कब तक साधारण नागरिक उठाता रहेगा।

इजरायल, ईरान और अमेरिका के जंग ने दुनिया के सबसे संवेदनशील ऊर्जा मार्ग हरमुज जलडमरूमध्य को संकट के मुहाने पर ला खड़ा किया है। दुनिया के तेल व्यापार का बड़ा हिस्सा इसी संकरे समुद्री रास्ते से गुजरता है। यहां से आपूर्ति रुकने या बाधित होने का असर सीधे दुनिया की अर्थव्यवस्था और भारत जैसे ऊर्जा आयातक देशों की जेब पर पड़ रहा है।

युद्ध की राजनीति में तेल केवल ऊर्जा नहीं, बल्कि रणनीतिक हथियार भी बन जाता है। ईरान लंबे समय से यह संकेत देता रहा है कि यदि उस पर सैन्य दबाव बढ़ता है तो वह हरमुज जलडमरूमध्य को बंद करने जैसे कदम उठा सकता है। यह धमकी सिर्फ एक बयान नहीं, बल्कि पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए चंतावनी है। दुनिया के तेल बाजार में जरा सी हलचल होते ही कीमते आसमान छूने लगीं हैं। इसका मतलब है कि पेट्रोल, डीजल और रसीदें गैस की कीमतों में उछाल, परिवहन महंगा और अंततः हर चीज की कीमत में वृद्धि। यह वही श्रृंखला है जो सीधे आम आदमी के जीवन में आर्थिक दर्द पैदा करती है।

भले ही भारत इस युद्ध का हिस्सेदार नहीं है और न ही यह युद्ध भारत और उसकी सीमाओं के आसपास लड़ा जा रहा है लेकिन फिर भी इस युद्ध के प्रभावों की दृष्टि से भारत इस वैश्विक खेल का एक कररे, तो आप 'नेता' नहीं, केवल 'शासक' हैं। भारतीय राजनीति को आज फिर से एक 'कामराज प्लान' या 'नानाजी देशमुख संकल्प' की जरूरत है। अगर 49 साल का एक ऑस्ट्रेलियाई नेता यह कह सकता है कि र मैं थक गया हूँ, र तो हमारे यहाँ 80 साल के नेताओं को यह स्वीकार करने में क्या शर्म है कि अब नई पीढ़ी को मौका मिलना चाहिए?

जैसा कि मैकियावेली ने कहा था— रशासक को शेर और लोमड़ी दोनों होना चाहिए, र लेकिन आधुनिक संदर्भ में शासक को 'ईसान' भी होना चाहिए जिसे अपनी सीमाओं का भान हो।

लिटिलप्राउड अकेले नहीं हैं जिन्होंने सत्ता से ऊपर उठकर सीा।

न्यूजीलैंड की पूर्व प्रधानमंत्री जेसिंडा अर्डर्न ने 2023 में ठीक ऐसे ही इस्तीफा दिया था। उन्होंने कहा था, रमेरे पास 40 की पर्याप्त ईंधन नहीं बचा है। र वह भी 40 की उम्र में ही पीछे हट गईं।

भूटान के राजा जिग्मे सिंग्ये वांगचुक ने लोकतंत्र की नींव मजबूत करने के लिए खुद सिंहासन त्याग दिया। ररुचये के राष्ट्रपति होसे मुहीका ने राष्ट्रपति भवन छोड़कर अपने खेत में रहना चुना और अपना ज्यादातर वेतन दान कर दिया।

**हमारे लिए सबक**
लिटिलप्राउड का इस्तीफा हम भारतीयों के लिए कई सवाल खड़े करता है। हमारे यहां नेता बनने को होड़ है लेकिन नेता छोड़ने की कला खत्म होता जा रहा है। हमारे यहां 60 साल के नेता खुद को 'युवा' कहलवाते हैं और 75 साल के नेता अगले 25 साल का कार्यक्रम बना रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी जब 2014 में सत्ता में आए थे, तब उन्होंने 75 से अधिक उम्र के नेताओं को मंत्रिमंडल से हटाकर एक नई परंपरा शुरू की थी लेकिन अब जब वह खुद 75 के हो गए हैं तो वही परंपरा खत्म हो गई। संघ प्रमुख ने भी शवाल देकर कुर्सी से चिपकें हैं।

सवाल यह है कि क्या सत्ता इतनी महत्वपूर्ण है कि उसके लिए हम अपने ही बनाए नियमों को भूल जाएं? क्या 49 साल में र मैं थक हूँ र कब उठने वाला ऑस्ट्रेलियाई नेता ज्यादा ईमानदार है, या 75 साल में र25 साल और बाकी हैँर कहने वाले भारतीय नेता?

डेविड लिटिलप्राउड का इस्तीफा हमें एक जरूरी सबक सिखाता है। राजनीति में सबसे बड़ी ताकत सत्ता नहीं बल्कि यह जानना है कि सत्ता छोड़ने का समय कब आ गया है।

49 साल के इस ऑस्ट्रेलियाई नेता ने वह कर दिखाया जो 85 साल के शरद पवार या 75 साल के नीतीश कुमार या फिर खुद 75 साल के प्रधानमंत्री मोदी नहीं कर पाए। उन्होंने कह दिया - मैं थक गया हूँ, अब और नहीं।

यह कमजोरी नहीं, बल्कि सबसे बड़ी ताकत है। यह ईमानदारी है। यह वही ईमानदारी है जो राजनीति में दिन-ब-दिन दुर्लभ होती जा रही है।

जैसा कि लिटिलप्राउड के सहयोगी एंगस टेलर ने कहा, “बहुत साल पहले एक बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा था... लोग यह याद नहीं रखते कि आप घोड़े पर कैसे चढ़े बल्कि यह याद रखते हैं कि आप कैसे उतरे।”

## विविध विशेष

यहाँ प्रकृति केवल देखने की चीज नहीं होगी, बल्कि जीवन की सबसे बड़ी शिक्षक होगी। इंटरनेट की अनुपस्थिति में भी ज्ञान का प्रकाश कम नहीं होगा, क्योंकि प्रकृति स्वयं एक विशाल पुस्तक की तरह सबके सामने खुली होगी।

इसने गरीब का सांस्कृतिक जीवन भी अत्यंत समृद्ध होगा। यहाँ त्योहार केवल औपचारिक आयोजन नहीं होंगे, बल्कि सामूहिक उल्लास और परंपरा का जीवंत रूप होंगे। जब किसी घर में शादी होगी तो पूरा गाँव उसकी तैयारी में शामिल होगा। मेलों और उत्सवों में लोकगीत गूँजेंगे, नृत्य होगा और लोगों के बीच आपसी स्नेह का वातावरण बनेगा। यहाँ मनोरंजन किसी स्क्रीन पर चलने वाले कार्यक्रमों से नहीं, बल्कि सामूहिक अनुभवों से मिलेगा। लोग मिलकर गाएँगे, कहानियाँ सुनाएँगे और जीवन की छोटी-छोटी खुशियों का आनंद लेंगे। इस वातावरण में अकेलापन कम होगा, क्योंकि हर व्यक्ति खुद को समुदाय का अभिन्न हिस्सा महसूस करेगा।

फिर भी यह गाँव अज्ञान या पिछड़ेपन का प्रतीक नहीं होगा। यहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास की महत्ता को पूरी तरह समझा जाएगा। लोग नई खोजों और विचारों के प्रति खुले रहेंगे, लेकिन वे यह भी समझेंगे

स्मृतियों, अनुभवों और परंपराओं में जीवित रहेगा।

आर्थिक दृष्टि से भी यह गाँव आत्मनिर्भरता की मिसाल बनेगा। इंटरनेट के अभाव में यहाँ ऑनलाइन बाजार नहीं होगा, लेकिन स्थानीय कारीगरों और किसानों की मेहनत से गाँव की जरूरतें पूरी होंगी। कुम्हार के चाक पर घूमती मिट्टी से सुंदर बर्तन बनेंगे, बुत्कर के कर्चये से रंगीन कपड़े निकलेंगे और किसान की मेहनत से खेतों में अन्न की हरियाली लहराएगी। लोग अपने आसपास के लोगों से वस्तुएँ खरीदेंगे और इस लेन-देन में केवल पैसा ही नहीं, बल्कि विश्वास और अपनापन भी शामिल होगा। इस तरह यह गाँव एक ऐसे आर्थिक ढाँचे को जन्म देगा जहाँ स्थानीयता और सहयोग सबसे बड़े मूल्य होंगे।

प्रकृति इस गाँव के जीवन का केंद्र होगी। जब लोग स्क्रीन की कृत्रिम रोशनी से दूर होंगे, तब उन्हें प्रकृति की सूक्ष्म सुंदरता को देखने का समय मिलेगा। वे रात के आकाश में तारों की अनगिनत कतारों को पहचानेंगे और चाँद के बदलते आकार में समय का प्रवाह महसूस करेंगे। नदी का शांत बहाव उन्हें धैर्य और निरंतरता का पाठ पढ़ाएगा, जबकि पेड़ों की छाया उन्हें संतुलन और शांति का महत्व समझाएगी।

## परिवहन विशेष www.newsparivahan.com

# भविष्य की दुनिया में सादगी का आखिरी ठिकाना

प्रो. आरके जैन “अरिजीत”

भविष्य की कल्पना करते ही एक ऐसे दुनिया सामने आती है जहाँ जीवन का लगभग हर पहलू इंटरनेट से जुड़ा होगा। घर, सड़कें, स्कूल और अस्पताल—सब कुछ डिजिटल नेटवर्क के सहारे चलेंगे। मनुष्य का दैनिक जीवन मानो एक विशाल स्क्रीन में सिमटता जाता दिखेगा। लेकिन इसी तेज और तकनीक से भरे भविष्य के बीच एक ऐसा गाँव भी होगा जो इस डिजिटल लहर से थोड़ी दूरी बनाए खड़ा होगा। यह गाँव इंटरनेट के बिना भी उतना ही जीवंत और सक्रिय रहेगा। यहाँ तकनीक की कमी को अभाव नहीं, बल्कि एक सोच-समझकर लिया गया निर्णय माना जाएगा। यह स्थान आधुनिक सभ्यता के बीच एक शांत द्वीप जैसा होगा, जहाँ मनुष्य अपने मूल स्वभाव के करीब लौटकर जीवन को बिना कृत्रिम शोर के सच्चाई से महसूस कर सकेगा।

इस गाँव की सुबह आधुनिक शहरों से बिल्कुल अलग होगी। यहाँ दिन की शुरुआत मोबाइल अलार्म या सोशल मीडिया के नोटिफिकेशन से नहीं, बल्कि प्रकृति के सहज संगीत से होगी। सूरज की पहली किरण खेतों पर पड़ते ही धरती की नमी से उठती सुगंध वातावरण को भर देगी। पक्षियों की चहचहाहट

# क्या राजनीति में 'रिटायरमेंट' एक अनैतिक शब्द है?

ऑकारेश्वर पांडेय

सत्ता की कुर्सी पर बैठे व्यक्ति को यह याद रखना चाहिए वह वहाँ हमेशा के लिए नहीं है। यदि वह समय रहते उतरना नहीं जानता तो इतिहास उसे धक्का देकर उतारता है।
इय यह शब्द किसी दार्शनिक के नहीं बल्कि उस राजनीतिक श्चिता के है जो आज के दौर में 'असंभव' ज्ञान पड़ती है।

हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के 49 वर्षीय नेता डेविड लिटिलप्राउड ने यह कहकर सबको चौंका दिया कि र मैं थक गया हूँ (I'm buggered), अब मुझमें वो ऊर्जा नहीं कि नेतृत्व कर सकूँ।
इय यह बयान महज एक इस्तीफा नहीं बल्कि उन 'कुर्सी-निपकू' राजनेताओं के गाल पर तमाचा है जो 76 की उम्र में भी 25 साल और बाकी हैँ का दंभ करते हैं।

मंगलवार को ऑस्ट्रेलिया की संसद में जो हुआ, उसने राजनीति की इस क्रूर परिभाषा को पूरी तरह बदल कर रख दिया।

ऑस्ट्रेलिया के प्रधानल पार्टी के नेता डेविड लिटिलप्राउड ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। उनके पास संख्याबल कम नहीं था। पार्टी ने उनके खिलाफ कोई साजिश नहीं रची थी। कोई स्कैंडल सामने नहीं आया था। वह सिर्फ रथक गए थे।

**वो पल जिसने सबको चुप करा दिया**

संसद में प्रश्नकाल खत्म होने के बाद डेविड लिटिलप्राउड अपनी पत्नी अमेलिया के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस में आए। 49 साल के इस नेता के चेहरे पर थकावट साफ झलक रही थी। उन्होंने बोलना शुरू किया तो अंडाजा हो गया कि यह कोई आम राजनीतिक घोषणा नहीं है।

उन्होंने कहा, र मैं एक ऐसे मोड़ पर आ गया हूँ, जहाँ मुझे लगता है कि अब समय आ गया है।”
आखों में नमी लिए लिटिलप्राउड ने कहा, र मैं बुरी तरह थक चुका हूँ। मेरा मन भर गया है। मैं प्रधान पार्टी से प्यार करता हूँ, मैं इसी में पला-बढ़ा हूँ, और मरते दम तक इरादें हरे और सुनहरे रंगों के लिए खून बहाऊंगा। मैं इसे प्यार करता हूँ लेकिन अगर मैं कहूँ कि मैं ही इसे आगे ले जाने के लिए सही व्यक्ति हूँ तो यह गलत होगा। मुझमें अब ऊर्जा नहीं है।”

एक शब्द जो उन्होंने बार-बार दोहराया - रबगर्डर यानी बुरी तरह थका हुआ। यह शब्द अब ऑस्ट्रेलिया की राजनीति में अपनी अलग जगह बना चुका है।

**कौन हैं डेविड लिटिलप्राउड ?**

डेविड लिटिलप्राउड ऑस्ट्रेलिया की नेशनल पार्टी के नेता थे। यह पार्टी ऑस्ट्रेलिया की लिबरल पार्टी के साथ मिलकर उद्वेग बन जाती है - हमारे यहां भाजपा और शिवसेना या जदयू और राजद के गठबंधन की तरह। 2016 में पहली बार संसद पहुंचे लिटिलप्राउड जल्दी ही पार्टी के शीर्ष नेता बन गए। वह कृषि और जल संसाधन मंत्री भी रह चुके हैं।

मई 2022 में जब उन्होंने पार्टी की कमान संभाली, तब पार्टी बुरे दौर से गुजर रही थी। उनके पूर्ववर्ती बरनबी जोयस का कार्यकाल विवादों से भरा रहा था। लेकिन लिटिलप्राउड के सामने चुनौतियां कम नहीं थीं। एक तरफ पॉलीन हैनसन की वन नेशन पार्टी ग्रामीण इलाकों में उनकी जड़ें काट रही थीं, दूसरी तरफ उनके ही पूर्व नेता बरनबी जोयस ने पार्टी छोड़ दी।

**नेहरू, 1962 की हार और वह ऐतिहासिक आत्मचिंतन**

आमतौर पर माना जाता है कि नेहरू सत्ता के अंत तक प्रधानमंत्री बने रहे लेकिन इतिहास के पन्ने कुछ और भी कहते हैं। 1962 के भारत-चीन युद्ध की हार ने नेहरू को भीतर तक तोड़ दिया था।
6 मई, 1962 को (युद्ध से पहले ही) उन्होंने कांग्रेस संसदीय दल से कहा था कि वे पद छोड़ना चाहते हैं। युद्ध के बाद, BBC को दिए एक साक्षात्कार में जब उनसे उनकी विरासत और विफलता पर सवाल हुआ तो नेहरू ने स्वीकार किया था:

“मैंने अपनी पूरी कौशिश की, लेकिन शाब्द अब समय आ गया है कि नई ऊर्जा और नए

विचार देश की कमान संभालें।

नेहरू ने अपनी सेवानिवृत्ति का फैसला पार्टी पर छोड़ा था लेकिन उनके भीतर वह लोकतांत्रिक 'गिल्ट' (पछतावा) था जो आज के नेताओं में दुर्लभ है।

कामराज प्लान: जब सत्ता को संगठन के चरणों में डाला गया

भारतीय राजनीति का सबसे महान 'प्याग' का उदाहरण 1963 का 'कामराज प्लान' है। के. कामराज, जो उस समय मद्रास के मुख्यमंत्री थे, ने नेहरू को सुझाव दिया कि बड़े नेताओं को सरकारी पद छोड़कर संगठन के काम में लगना चाहिए।

क्या हुआ था? कामराज ने खुद मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया। उनके पीछे-पीछे लाल बहादुर शास्त्री, जगजीवन राम और मोरारजी देसाई जैसे 6 केंद्रीय मंत्रियों और 6 मुख्यमंत्रियों ने इस्तीफे सौंप दिए।

क्यों छोड़ा ऑफर ? नेहरू की मृत्यु के बाद कामराज के पास प्रधानमंत्री बनने का स्पष्ट अवसर था। वे 'किंगमेकर' थे लेकिन उन्होंने प्रसिद्ध वाक्य कहा— रNo politics, no poster ( न राजनीति, न पद)। उन्होंने शास्त्री और बाद में इंदिरा गांधी को आगे बढ़ाया, खुद कभी सत्ता की मलाई नहीं चखी।

**नानाजी देशमुख: 60 साल का वह 'लक्ष्मणरेखा' संकल्प**
भाजपा आज जिस 'नैतिकता' और 'अंत्योदय' की बात करती है, उसके पुरोधे नानाजी देशमुख ने 1977 में जनता पार्टी की सरकार में उद्योग मंत्री बनने से इनकार कर दिया था। उन्होंने घोषणा की थी:

र70 और 80 की उम्र तक सत्ता में बने रहना युवाओं के साथ अन्याय है। मैं 60 वर्ष की आयु में सक्रिय राजनीति छोड़ रहा हूँ।

नानाजी ने चित्रकूट में रचनात्मक कार्य चुना लेकिन आज की भाजपा ने नानाजी के उस 'आदर्श' को कूड़ेदान में डाल दिया है।

वैश्विक परिदृश्य: मोदी, ट्रंप और नेतन्याहू

पर उठते सवाल

सत्ता का मोह केवल भारत तक सीमित नहीं है। आज पूरी दुनिया में 'Gerontocracy' ( वृद्धों का शासन) पर बहस छिड़ी है:

**पहले भारत की बात कीजिए।**

हमारे यहां 75 परा नेताओं की कोई कमी नहीं है। शरद पवार जी की उम्र 85 साल है। नीतीश कुमार जी 75 के हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी 17 सितंबर 2025 को 75 साल पूरे किए हैं।

यह वही उम्र है जिस पर भाजपा ने परंपरा के तौर पर कई वरिष्ठ नेताओं को सक्रिय राजनीति से सेवानिवृत्त कर दिया था। लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, आदि कई नेताओं को 75 साल की उम्र में पदमुक्त कर दिया गया था। मोदी सरकार के पहले कांफ्रेंस में तो पार्टी ने अपने 75 से अधिक उम्र के कई नेताओं को मंत्रिमंडल से हटाकर यह संकेत दे दिया था कि यह पार्टी की नीति है।

शरद पवार जी ने खुद पिछले साल सितंबर में एक इंटरव्यू में कहा था, र मैं 75 साल की उम्र में नहीं रुका, अब मैं 85 साल का हूँ और अभी भी काम कर रहा हूँ। इसलिए मैं नरेंद्र मोदी को 75 के बाद रुकने के लिए नहीं कह सकता। मेरा कोई नैतिक अधिकार नहीं है।

नरेंद्र मोदी (75 वर्ष): लेकिन 17 सितंबर 2025 को जब वे खुद 75 के हुए तो नियम बतल दिए गए। गृह मंत्री अमित शाह ने स्पष्ट किया कि रभाजपा के संविधान में ऐसा कोई अनिवार्य रिटायरमेंट नहीं है। र पीएम ने खुद 'परीक्षा पे चर्चा' (फरवरी 2026) में कहा— र75 पर किसी ने फोन किया तो मैंने कहा 25 अभी बाकी है।

**संघ प्रमुख का वक्तव्य और फिर पलटवार**

इस पूरे बहस के बीच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत का एक बयान बेहद चर्चित रहा। जुलाई 2025 में नागपुर में एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा था - रजब लोग आपको शांल ओढ़ाने लेंगे तो समझ जाइए कि अब

संन्यास लेने का समय आ गया है। र

यह बयान उस समय आया था जब मोहन भागवत और नरेंद्र मोदी दोनों ने सितंबर 2025 में 75 साल पूरे करने थे - भागवत 11 सितंबर को और मोदी 17 सितंबर को। मोदी ने तो भागवत के जन्मदिन पर उनकी विदाई के लिए बाकायदा लेख लिख डाला हालांकि भागवत ने इसका प्रस्तुत नहीं दिया।
विपक्ष ने भागवत के बयान को प्रधानमंत्री के लिए संकेत बताया। शिवसेना ( युवती) के संजय राउत ने कहा, रप्रधानमंत्री मोदी ने आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी और जसवंत सिंह को 75 साल में रिटायर कर दिया। अब देखते हैं कि क्या वह यह नियम खुद पर लागू करते हैं।

कांग्रेस नेता अधिषेक सिंघवी ने भी कटाक्ष किया - रबिना आचरण के उपदेश खतरनाक होता है। मार्गदर्शक मंडल पर जो नियम लागू होंगे।

लोकन फरवरी 2026 में आते-आते स्थिति साफ हो गई। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने साफ कह दिया कि वह तभी पर छोड़ेंगे जब संघ उनसे कहेगा। मुंबई में एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा, र मैंने 75 साल पूरे कर लिए हैं और संघ को इसकी जानकारी दे दी है, लेकिन संघ ने मुझसे काम जारी रखने को कहा है। जब भी संघ कहेगा, मैं पद छोड़ दूंगा लेकिन काम से कभी रिटायरमेंट नहीं होगा।

**यानी वही शांल ओढ़ाने वाली बात अब पीछे रह गई।**

**'25 अभी बाकी है'**

फरवरी 2026 में ही 'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी से जब उम्र का सवाल पूछा गया तो उन्होंने एक किस्सा सुनाया। उन्होंने कहा, र75वें जन्मदिन पर एक नेता ने मुझे फोन किया। उन्होंने कहा कि आपने 75 वर्ष पूरे कर लिए हैं, तो मैंने उनसे कहा - 25 अभी बाकी है।

यानी साफ संकेत कि वह 2047 तक काम करना चाहते हैं, जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा। पार्टी के नेताओं ने भी साफ कर दिया है कि मोदी 2029 का चुनाव भी लड़ेंगे। गृह मंत्री अमित शाह पहले ही कह चुके हैं कि भाजपा के संविधान में 75 साल में रिटायरमेंट का कोई प्राधान्य नहीं है।

डोनाल्ड ट्रंप (79 वर्ष) : अमेरिका में भी यह मांग उठी कि क्या 80 की दहलीज पर खड़ा व्यक्ति दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति बनकर चलने के लिए तैयार रहना खस्ता है।

बेंजामिन नेतन्याहू (76 वर्ष) : इजरायल में उन पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं और पद छोड़ने का भारी दबाव है लेकिन वे 'राष्ट्रीय सुरक्षा' का हीवाला देकर कुर्सी से चिपकें हैं।
**विरोधवासे: भ्रष्टाचार, वंशवाद और नीतीशका 'पुत्रमोह'**
भाजपा और नीतीश कुमार के राजनीतिक करियर की सबसे बड़ी पूंजी 'वंशवाद का विरोध' रही है। उन्होंने लालू यादव और गांधी परिवार को 'दीमक' कहा लेकिन आज की कड़वी सच्चाई यह है:

नीतीश कुमार के बेटे की राजनीति में एंट्री को जिस तरह 'मजबूरी' या 'क्षमता' का नाम दिया जा रहा है, वह उनके पुराने सिद्धांतों की हत्या है।

**भ्रष्टाचार:**

जब दागी नेता दूसरी पार्टी छोड़कर भाजपा में आते हैं, तो वे 'वांशिंग मशीन' में धुल कर साफ हो जाते हैं।

रसाहूर दार्शनिक लॉर्ड एक्टन ने कहा था: मरता भ्रष्ट करती है, और पूरा सत्ता पूर्ण रूप से भ्रष्ट करती है। र (Power tends to corrupt, and absolute power corrupts absolutely).

क्षमता और नैतिकता का सवाल सवाल केवल उम्र का नहीं है। सवाल 'कार्य-निष्पानदन' (Performance) का भी है।

बहस अक्सर आरोप-प्रत्यारोप की आग में उलझ रही है। विपक्ष सरकार से सवाल करता है कि तेल और गैस की बढ़ती कीमतों से जनता को राहत क्यों नहीं दी जा रही। सरकार जवाब देती है कि यह वैश्विक बाजार का असर है और भारत ने जितना संभव है संतुलन बनाने की कौशिश कर रही है। विपक्ष सरकार को गैस एजेंसियों के सामने लगी हुई लंबी-लंबी लाइन दिखाकर सवाल खड़े कर रहा है तो सरकार इसे उसकी क्षुद्र राजनीति बता रही है।

सच यह है कि दोनों पक्ष अपनी-अपनी राजनीतिक मजबूरियों के साथ खड़े हैं, लेकिन इन बहसों के बीच वह व्यक्ति सबसे ज्यादा परेशान है जो सुबह मोटरसाइकिल में पेट्रोल भरवाता है, दोपहर में सब्जी खरीदता है और शाम को सिलेंडर की कीमत का हिसाब लगाता है। अंतरराष्ट्रीय राजनीति के बड़े-बड़े बयान और टीवी स्टूडियो की बहसें उसके जीवन की वास्तविकता को नहीं बदलतीं। उसके लिए जंग का मतलब है महंगाई, और महंगाई का मतलब है रोजमर्रा की जरूरतों पर कुठाराघात।

इस पूरे परिदृश्य में सबसे दिलचस्प और विडंबनापूर्ण पहलू यह है कि तेल की वैश्विक राजनीति अक्सर कुछो सियासत का सबसे सुविधाजनक हथियार बन जाती है। जब कीमते बढ़ती हैं तो विपक्ष सरकार पर हमला करता है कि उसने टैक्स कम नहीं किए। जब कीमते कुछ कम होती हैं तो सरकार इसे अपनी आर्थिक नीति की सफलता बताती है। लेकिन आम आदमी के लिए यह बहस उस पुरानी कहावत की सीमलती है जिसमें “हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और” होते हैं। उसे तो बस इतना पता है कि उसका बजट लगातार असंतुलित होता जा रहा है।

पश्चिम एशिया की जंग केवल तेल तक सीमित नहीं वरर वैश्विक कुटनीति, वचंसव के लिए चल चला दांव, सैन्य बलबल और शक्ति संतुलन की जटिल कहानी भी है। इजरायल की सुरक्षा चिंताएं, ईरान की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाएं और अमेरिका की रणनीतिक मौजूदगी- इन तीनों के बीच खिंची रस्साकशी किसी भी क्षण विश्व युद्ध का रूप ले सकती है। यदि ऐसा हुआ तो उसका असर केवल उस क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेगा। तेज बाजार में उथल-पुथल, समुद्री व्यापार में बाधा और

यही समय है जब दुनिया को यह समझने की जरूरत है कि ऊर्जा संसाधनों पर आधारित शक्ति की राजनीति अंततः मानव समाज को ही कमजोर करती है। यदि वैश्विक नेतृत्व सचमुच स्थिरता चाहता है तो उस युद्ध की सफलता में उथल-पुथल, समुद्री व्यापार में बाधा और

यही समय है जब दुनिया को यह समझने की जरूरत है कि ऊर्जा संसाधनों पर आधारित शक्ति की राजनीति अंततः मानव समाज को ही कमजोर करती है। यदि वैश्विक नेतृत्व सचमुच स्थिरता चाहता है तो उस युद्ध की सफलता में उथल-पुथल, समुद्री व्यापार में बाधा और

## अनुशासन या अपमान? शिक्षा व्यवस्था पर उठते सवाल

(जब शिक्षक ही असमंजस और भय के माहौल में होंगे, तो शिक्षा व्यवस्था पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।)

-डॉ. सत्यवान सौरभ

हाल के दिनों में 'विद्यालय में छात्राओं को "गुर्ग" बनाकर दंड देने की घटना को लेकर व्यापक चर्चा और विवाद देखने को मिला है। सोशल मीडिया पर एक वीडियो सामने आने के बाद इस मुद्दे ने राजनीतिक और सामाजिक बहस का रूप ले लिया। कुछ लोगों ने इसे बच्चों के सम्मान के खिलाफ अमानवीय व्यवहार बताया, जबकि कुछ लोगों का मानना है कि अनुशासन बनाए रखने के लिए शिक्षकों को कुछ हद तक कठोर होने की आवश्यकता होती है। इस पूरे विवाद के बीच सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या शिक्षा व्यवस्था में अनुशासन की भूमिका समाप्त हो रही है, या फिर हम अनुशासन और सम्मान के बीच संतुलन बनाने में असफल हो रहे हैं।

किसी भी घटना पर अंतिम राय बनाने से पहले उसका पूरा सच सामने आना आवश्यक होता है। कई बार अधूरी जानकारी या किसी एक वीडियो के आधार पर पूरे मामले को आकलन कर लिया जाता है, जबकि वास्तविकता उससे अलग भी हो सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि ऐसी घटनाओं को निष्पक्ष जांच हो और तथ्यों के आधार पर ही कोई निर्णय लिया जाए। बिना जांच के किसी शिक्षक को दोषी ठहराना उतना ही गलत है जितना कि बच्चों के साथ किसी प्रकार के अपमानजनक व्यवहार को उचित ठहराना।

विशेष समाज में विद्यालय के पराधीन का केंद्र नहीं रहा है, बल्कि वह बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण का एक महत्वपूर्ण संस्था भी रहा है। विद्यालयों में शिक्षा के साथ-साथ

वैश्विक आर्थिक अस्थिरता की लहरें दूर-दूर तक महसूस की जाएंगी।

भारत के लिए तो चुनौती दोहरी है। एक ओर उसे अपनी ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करनी है, दूसरी ओर घरेलू आर्थिक स्थिरता बनाए रखनी है। सरकार ने वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों, रणनीतिक तेल भंडार और विविध आयात मार्गों की बात जरूर की है, लेकिन सच यह भी है कि निकट भविष्य में तेल पर निर्भरता पूरी तरह समाप्त करना संभव नहीं है। यही कारण है कि पश्चिम एशिया में हर संकेत भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए झटका बन जाता है।

इन परिस्थितियों में बंध सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या राजनीति को कम से कम ऐसे मुद्दों पर थोड़ी परिपक्वता नहीं दिखानी चाहिए?

जब वैश्विक संकट सामने हो, तब देश के भीतर संवाद और सहयोग की संस्कृति मजबूत होनी चाहिए लेकिन दुर्भाग्य से अक्सर ऐसा नहीं होता। संसद से लेकर सड़क तक, हर जगह आरोपों की ऐसी गूंज सुनाई देती है जिसमें समाधान की आवाज ने क बराबर और एक दूसरे की टांग खिंचाई कहीं अधिक होती है।

आखिरकार जंग का सबसे बड़ा सच यहि है कि उसके असली पीड़ित वे लोग होते हैं जिनका उससे सीधा कोई संबंध नहीं होता। तेल की कीमतों में उछाल, गैस सिलेंडर की महंगाई और रोजमर्रा की वस्तुओं की बढ़ती लागत-ये सब उस अवॉछित युद्ध के परिणाम हैं जिसे आम आदमी ने कभी चुना ही नहीं। उसके लिए दुनिया की सबसे बड़ी ताकतों की रणनीति का अर्थ सिर्फ इतना है कि उसके घर का बजट और तंग हो गया है।

यही समय है जब दुनिया को यह समझने की जरूरत है कि ऊर्जा संसाधनों पर आधारित शक्ति की राजनीति अंततः मानव समाज को ही कमजोर करती है। यदि वैश्विक नेतृत्व सचमुच स्थिरता चाहता है तो उस युद्ध की सफलता में उथल-पुथल, समुद्री व्यापार में बाधा और

( अदिति फीचर्स )

डॉ. धनश्याम बादल

(वरिष्ठ स्तंभकार एवं राजनीतिक विश्लेषक)



## संगम विश्वविद्यालय मे एस यू हैकथन 2026 का सफल समापन, देशभर की टीमों ने दिखाया नवाचार

16 राज्यों की 23 टीमों ने लिया फाइनल में हिस्सा, विजेताओं को नकद पुरस्कार से किया गया सम्मानित।।

अनूप कुमार शर्मा परिवहन विशेष

भोलवाड़ा संगम विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय SU Hackathon 2026 का सफलतापूर्वक समापन हुआ। इस आयोजन में विभिन्न राज्यों से आए विद्यार्थियों ने नवाचार आधारित तकनीकी समाधान प्रस्तुत करते हुए अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कुल 45 से अधिक पंजीकरण में से 6 राज्यों की 23 टीमों को अंतिम चरण के लिए चयनित किया गया। प्रत्येक टीम के बाद प्रथम स्थान स्वामीनारायण यूनिवर्सिटी, गुजरात की टीम ने प्राप्त किया, जिसे ₹51,000 की पुरस्कार राशि प्रदान की गई। वहीं द्वितीय स्थान एम एल वी टेक्सटाइल एंड इंजीनियरिंग कॉलेज, भोलवाड़ा की टीम ने



हासिल किया, जिसे ₹21,000 की पुरस्कार राशि दी गई। इसके अतिरिक्त डोमेन एक्सप्लोस श्रेणी में प्रत्येक डोमेन के विजेताओं को ₹11,000 की पुरस्कार राशि प्रदान की गई। स्टार्टअप आईडिया में सर पदमपत सिंघानिया यूनिवर्सिटी, उदयपुर, टेक्सटाइल में एम एल वी टेक्सटाइल एंड इंजीनियरिंग कॉलेज, भोलवाड़ा,

एपीकलचर व स्किल डेवलपमेंट में स्वामीनारायण यूनिवर्सिटी, गुजरात तथा इंजीनियरिंग एंड मैनुफैक्चरिंग में सर पदमपत सिंघानिया यूनिवर्सिटी, उदयपुर की टीमों को सम्मानित किया गया। समापन समारोह में संगम समूह के डॉ. एस. एन. मोदानी ने विजेता टीमों को सम्मानित करते हुए विद्यार्थियों को नवाचार और तकनीकी शोध के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में

मुख्य अतिथि वैज्ञानिक गौरव बाफना (SAC, अहमदाबाद) तथा विशिष्ट अतिथि रेडी बाइट्स, भोलवाड़ा के श्याम सुंदर वर्मा उपस्थित रहे तथा अपने आधुनिक युग में नवाचार पर अपने विचार रखे।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. करुणेश सक्सेना, प्रो-वीसी प्रो. मानस रंजन पाणिग्रही, कुलसचिव डॉ. आलोक कुमार, कार्यक्रम सह संयोजक संगम आईटीबीआई के राजस्व कौशल सहित विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के संयोजक प्रो. विकास सोमानी एवं डॉ. मनोज कुमार ने सफल आयोजन के लिए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। समापन समारोह में विजेता टीमों और निर्णायकों को सम्मानित किया गया। यह आयोजन विद्यार्थियों के लिए नवाचार, तकनीकी सहयोग और स्टार्टअप सोच को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण मंच साबित हुआ।

## वर्ल्ड कंज्यूमर राइट्स डे मनाया गया: 'सेफ प्रोडक्ट्स, कॉन्फिडेंट कंज्यूमर'

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: राज्य सरकार के फूड सप्लाई और कंज्यूमर वेलफेयर डिपार्टमेंट ने लोकल जयदेव भवन में वर्ल्ड कंज्यूमर राइट्स डे-2026 का स्टेट-लेवल फंक्शन ऑर्गेनाइज किया। इस फंक्शन में, फूड सप्लाई और कंज्यूमर वेलफेयर डिपार्टमेंट के डायरेक्टर और स्पेशल सेक्रेटरी, श्री त्रिपाठी केशन देहरी चीफ गेस्ट के तौर पर शामिल हुए और वर्ल्ड कंज्यूमर राइट्स डे, 2026 मनाते के मकसद से बदलती डिजिटल दुनिया में कंज्यूमर अवेयरनेस की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने डिपार्टमेंट द्वारा लागू की गई अलग-अलग वेलफेयर स्कीम्स के बारे में जानकारी दी और कंज्यूमर्स को सतर्क रहने और जरूरत पड़ने पर कंज्यूमर कोर्ट में मदद लेने की सलाह दी।

खोरधा डिस्ट्रिक्ट कंज्यूमर डिस्प्यूट्स रिड्यूसल कमीशन की मंवर, सुश्री शुभलक्ष्मी त्रिपाठी गेस्ट ऑफ ऑनर के तौर पर शामिल हुईं और स्टेट और



डिस्ट्रिक्ट कंज्यूमर डिस्प्यूट्स रिड्यूसल कमीशन को असरदार बनाने के लिए सरकार द्वारा उठाए जा रहे अलग-अलग टोस कदमों पर चर्चा की और एक सतर्क कंज्यूमर सोसाइटी बनाने की दिशा में उन्हें मजबूत करने का सुझाव दिया। कंज्यूमर डे की थीम 'सेफ प्रोडक्ट्स, कॉन्फिडेंट कंज्यूमर' पर हाईलाइट की गई।

इस मौके पर, SICA की तरफ से पब्लिश की गई मैगजीन रखाती पटसमर लॉन्च की गई और डिपार्टमेंट की तरफ से

ऑर्गेनाइज स्पीच कॉम्पिटिशन में परफॉर्म करने वाले स्टूडेंट्स को अवॉर्ड दिया गया। इसके अलावा, डिपार्टमेंट के स्टॉफ ने रसवाच सौदागरर नाटक भी स्टेज पर किया।

आखिर में, फूड सप्लाई और कंज्यूमर वेलफेयर डिपार्टमेंट के डिप्लिनेरी सेक्रेटरी श्री मनोज कुमार पटनायक ने कंज्यूमर राइट्स, लॉज और अवेयरनेस पर अपनी स्पीच दी और वोट ऑफ थैंक्स कहा।

## विश्व उपभोक्ता दिवस पर जागरूकता समारोह

जागरूक उपभोक्ता ही जिम्मेदार नागरिक की पहचान : डॉ. शंभु पंवार

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली, 15 मार्च। वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार-विचारक डॉ. शंभु पंवार ने कहा प्रत्येक नागरिक केवल उपभोक्ता ही नहीं, बल्कि अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक जिम्मेदार नागरिक भी है। हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हम जागरूक बनने और दूसरों को भी उपभोक्ता अधिकारों के प्रति जागरूक करेंगे।

डॉ. शंभु पंवार रविवार को विश्व उपभोक्ता दिवस के अवसर पर झुंझुनू जिला उपभोक्ता समिति के तत्वावधान में चिड़वा शहर में सनातन आश्रम में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में बोल रहे थे। समारोह के मुख्य वक्ता के रूप में दो राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता एवं जिला उपभोक्ता समिति के जिलाध्यक्ष प्रभुशरण तिवारी ने कहा कि "जागो ग्राहक जानो" केवल एक नारा नहीं, बल्कि सुरक्षित और पारदर्शी बाजार व्यवस्था का आधार है। उन्होंने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की जानकारी देते हुए कहा कि उपभोक्ता खरीदारी के समय पक्का बिल अवश्य लें और वस्तुओं की गुणवत्ता तथा मानकों की जांच करें, तभी अनुचित



व्यापारिक प्रथाओं पर प्रभावी नियंत्रण संभव है। विशिष्ट अतिथि प्रवासी उद्योगपति हुक्मीचंद लाम्बीवाला, शिक्षाविद हीरालाल शर्मा खजपुर, पूर्व पार्षद शिवलाल सैनी, जिला संगठन प्रभारी कैप्टन शंकरलाल महारनिया, डॉ. एल.के.शर्मा, कवि नगेन्द्र शास्त्री, कांतिप्रसाद हलवाई ने डिजिटल युग में बढ़ती ऑनलाइन खरीदारी के दौरान होने वाली धोखाधड़ी से सावधान रहने तथा उपभोक्ता फोरम में शिकायत दर्ज कराने की

प्रक्रिया की जानकारी भी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता वैद्य जनार्दन शर्मा ने की।

कार्यक्रम के दौरान डीजे के कानफोड संगीत पर रोक लगाने या उसकी आवाज सीमित करने की मांग भी जोर-शोर से उठाई गई। उपस्थित लोगों ने प्रशासन से इस दिशा में सख्त कार्रवाई करने की अपील की।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. अशोक शर्मा अरडावतिया ने किया। इस अवसर पर अशोक सुरोलिया, रमेश शर्मा, बालकृष्ण

चौरासिया, गिरधर गोपाल महमिया, रजनीकांत मिश्रा, सुरेश शंखावत, तेजप्रकाश सोनी, मनीष शर्मा, आयुष मोरोलिया, महेन्द्र रणवा, रामनिवास जांगिड़, देवदत्त शर्मा, रामू सोलंकी, मातादीन महर्षि, रतीराम जांगिड़ सहित अनेक गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। समारोह के अंत में उपस्थित सभी लोगों ने समाज में उपभोक्ता अधिकारों के प्रति व्यापक जागरूकता फैलाने का संकल्प लिया।

## भारत सरकार के केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल साहब के जन्मदिवस पर 750 स्वच्छता प्रहरियों को वस्त्र वितरण



परिवहन विशेष न्यूज

सूरत। भारत सरकार के केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल साहब के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में फोस्टा (FOSTTA) द्वारा शनिवार, 14 मार्च 2026 को शाम 5:30 बजे मिलेनियम मार्केट-1 परिसर में सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान 750 स्वच्छता प्रहरी भाई-बहनों को वस्त्र वितरित किए गए। इस अवसर पर केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल साहब, लिंबायत विधायक संगीता बेन पाटिल, भाजपा सूरत शहर अध्यक्ष परेश भाई पटेल, महामंत्री किशोर भाई बिंदल तथा पार्षद दिनेश भाई राजपुरोहित विशेष रूप से

उपस्थित रहे। कार्यक्रम में फोस्टा (FOSTTA) के अध्यक्ष कैलाश हाकीम, उपाध्यक्ष रामलाल सीरवी व सुरेश मोदी, तथा डायरेक्टर मोहनसिंह राजपुरोहित, पुरुषोत्तम अग्रवाल, शैलेश शाह सहित अनेक गणमान्य व्यापारी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में आयोजकों ने सभी अतिथियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

## लहजे की मिठास और किरदार की बुलंदी इंसान को कभी हारने नहीं देती।"

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

इंसानी ताल्लुक़ात (रिश्ते) बहुत नाजूक होते हैं। कभी-कभी लाख कोशिशों के बावजूद रिश्तों में वह गर्माहट नहीं रहती और कड़वाहट घर कर लेती है। ऐसे मोड़ जब ताल्लुक़ात खराब हो जाएँ, तो खामोशी अखिरतार कर लेनी चाहिए।

खामोशी, एक मजबूत ढाल है, जब बातचीत में तलखी (कड़वाहट) बह जाए, तो अक्सर इंसान मुस्से में ऐसी बातें कह जाता है जो ताउम्र के लिए ख़त्म बन जाती हैं। जो लोग बा-वकार (इज्जतदार) होते हैं, वे जानते हैं कि खामोशी का मतलब हार मान

लेना नहीं, बल्कि अपनी और सामने

वाले की साख़ को बचाना है। चौखने-चिल्लाने से मसले हल नहीं होते, बल्कि और उलझ जाते हैं।

जाती हमले और खानदानी शराफ़त जरूरी है,

सबसे खूबसूरत बात यह है कि "खानदानी लोग बात को जातियात तक नहीं ले जाते र एक ऊंचे किरदार और अच्छी तरबियत (परवरिश) की पहचान यही है कि वह झगड़े के दौरान भी अपनी तह जीब का दामन नहीं छोड़ता। आज के दौर में हम देखते हैं कि जैसे ही रिश्ता टूटता है, लोग एक-दूसरे के राज़ फ़ाश करने लगते हैं या निज़ी हमले शुरू कर देते हैं। लेकिन एक

बा-ज़रफ़ (बड़े दिल वाला) इंसान वह है जो अलग होते वक़्त भी अपनी मर्यादा का खयाल रखे।

इज़्जत के साथ निगाहकशी या पीछे हट जाना कभी-कभी बुज़ादिली नहीं, बल्कि बहुत बड़ी बहादुरी होती है। इज़्जत से पीछे हट जाना बेहतर होता है, यह वाक्य हमें सिखाता है कि अगर किसी जगह आपकी कद्र न हो या रिश्ता बोल बन जाए, तो वहाँ से गिरमा के साथ निकल जाना ही बेहतर है। लड़कर या कीचड़ उछालकर अलग होने से इंसान अपनी खुद की नज़र में गिर जाता है।

तरबियत और किरदार का इम्तिहान होता है, रिश्ते निभाते वक़्त तो हर कोई

अच्छा होता है, लेकिन असली किरदार और तरबियत का पता तब चलता है जब रिश्ता टूट रहा हो। मुश्किल वक़्त में आप अपना आपा नहीं खोते और अपनी परवरिश की लाज रखते हैं, यही आपकी असल जीत है।

रिश्ते का खत्म होना दुखद हो सकता है, लेकिन इंसानियत का खत्म होना उससे भी बड़ी त्रासदी है। अपनी जुबान को कड़वाहट से पाक रखना और दूसरों की इज़्जत का खयाल रखना ही एक बा-शऊर (समझदार) इंसान की पहचान है। "लहजे की मिठास और किरदार की बुलंदी इंसान को कभी हारने नहीं देती।"

### राज्यसभा का पवित्र स्नान...!

जब जनता का "मिजाज" बदल जाए अचानक, वोटों की नाव डूबने लगे नया बनाओ कथानक। नेताजी के चेहरे पर आए मुस्कान जागे अरमान, अब चलो कर लेते हैं राज्यसभा में पवित्र स्नान!

ना रेली की धूल ना जनता की करना पड़े गुहार, ना घर-घर जाकर हाथ जोड़ना पड़े रहें बार-बार। बस पार्टी का हो आशीर्वाद व दिल्ली का विमान, सीधे ही पहुँच जाते हैं राज्यसभा के घाट महान।

यहाँ कोई बोले हैं—"यह अनुभव का है सम्मान", तो कोई कहता—"यह राजनीति का है वरदान।" देश की जनता मुस्कुरा के होले-होले कह देती है, "ये हार का नहीं सियासत का भी नया है प्लान।"

संजय एम तराणेकर (कवि, लेखक व समीक्षक)

### संवेदनाओं का टूटता घरौदा।

अब जीवन का हर एक पल 'मुश्किलों' से भरा हुआ है, रिश्तों में 'दूरियों' बढ़ती जा रही है, कोई किसी का नहीं होता, इस जहान में,

तभी तो सामने आ ही जाता है संवेदनाओं का टूटता घरौदा...। आज 'भावत्मक' अभिव्यक्ति शून्य ही हो गई है, कोई किसी का नहीं, मतलबी लोग 'ज्यादा' नजर आते हैं

आपसी सौहार्द, प्रेम और भाईचारा कैसे कायम रहेगा, इंसालिए, संवेदनाओं का टूटता घरौदा नजर आता है मुझे।

अड़ोस-पड़ोस में दुःख-सुख

का नहीं है कोई साथ, शहरों की भागम-भाग में दूरियाँ बढ़ गई हैं हर जगह अपनापन खत्म हो सा गया इस जहान में,

तभी तो संवेदनाओं का टूटता घरौदा नजर आता है मुझे। वो 'घर-द्वार', वहाँ ओटलों की अपनी चौपाल, कहाँ चली गई, बड़े-बुजुर्गों की अपनी बात। आज बंद कमरों में 'ईट-पत्थरों' की चारिद्वारी,

और मोबाइल का ही रहा साथ, इंसालिए ही संवेदनाओं का टूटता घरौदा नजर आता है मुझे। स्वरचित रचना मौलिक व अप्रकाशित रचनाकार हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग नसिया इन्दौर मध्य-प्रदेश

## तेल-गैस संकट के समय आत्मनिर्भर क्यों नहीं बने?

सौरभाषण्य

दुनिया में जब भी मध्य-पूर्व में तनाव या युद्ध की स्थिति बनती है, तब सबसे पहले तेल-गैस की कीमतों पर असर पड़ता है। भारत जैसे देश, जो अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात से पूरा करते हैं, ऐसे समय में सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। सवाल यह उठता है कि आखिर इतने वर्षों बाद भी भारत तेल-गैस के मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर क्यों नहीं बन पाया?

सबसे बड़ा कारण यह है कि भारत के पास सीमित प्राकृतिक तेल-गैस भंडार हैं। देश में कुछ क्षेत्रों—जैसे समुद्री तटों और पूर्वी तट राज्यों—में तेल-गैस मिलती है लेकिन यह हमारी बढ़ती जरूरतों के मुकाबले बहुत कम है। आज भी भारत अपनी लगभग 80-85 प्रतिशत कच्चे तेल की जरूरत विदेशों से आयात करता है। दूसरा कारण यह है कि ऊर्जा की मांग लगातार बढ़ रही है।

औद्योगिक विकास, बढ़ती आबादी और वाहनों की संख्या में तेजी से वृद्धि के कारण तेल-गैस की खपत लगातार बढ़ती जा रही है। घरेलू उत्पादन इस गति से नहीं बढ़ पाया। तीसरा कारण नीतिगत और तकनीकी चुनौतियाँ भी रही हैं। कई बार तेल-गैस की खोज

और उत्पादन के लिए पर्याप्त निवेश, आधुनिक तकनीक और निजी क्षेत्र की भागीदारी समय पर नहीं बढ़ पाई। इसके कारण संभावित भंडारों का पूरा उपयोग नहीं हो सका।

हालाँकि, हाल के वर्षों में सरकार ने आत्मनिर्भर ऊर्जा की दिशा में कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। सौर और पवन ऊर्जा को बढ़ावा देना, जैव-ईंधन (एथेनॉल) का उपयोग बढ़ाना, इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहन देना और नए तेल-गैस क्षेत्रों की खोज करना इसी दिशा के प्रयास हैं। स्पष्ट है कि तेल-गैस में पूर्ण आत्मनिर्भरता हासिल करना आसान नहीं है, लेकिन ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों और घरेलू उत्पादन को बढ़ाकर भारत अपनी निर्भरता जरूर कम कर सकता है। यही भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा का रास्ता भी है।

ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों और घरेलू उत्पादन कैसे बढ़ाएँ

देश में बार-बार उभरने वाला तेल-गैस संकट यह संकेत देता है कि केवल आयातित ऊर्जा पर निर्भर रहना लंबे समय तक सुरक्षित रणनीति नहीं हो सकती। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा विदेशों से आयात करता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय



बाजार में कीमत बढ़ने या भू-राजनीतिक तनाव होने पर देश की अर्थव्यवस्था तुरंत प्रभावित हो जाती है। ऐसे में ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों को बढ़ावा देना और घरेलू उत्पादन को मजबूत करना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है। सबसे पहले, सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय स्रोतों का तेजी से विस्तार करना होगा। भारत भौगोलिक रूप से सौर ऊर्जा के लिए बेहद अनुकूल देश है। अगर गांव-गांव में रूफटॉप सोलर प्लांट और बड़े सौर पार्क स्थापित किए जाएँ तो बिजली उत्पादन का बड़ा हिस्सा स्वदेशी और स्वच्छ स्रोतों से प्राप्त किया जा सकता

है। इसी तरह तटीय क्षेत्रों और खुले मैदानों में पवन ऊर्जा की अपार संभावनाएँ हैं। दूसरा महत्वपूर्ण कदम घरेलू तेल और गैस उत्पादन को बढ़ाने का है। इसके लिए नई खोज, आधुनिक तकनीक और निजी निवेश को प्रोत्साहित करना होगा। समुद्री क्षेत्रों और कठिन भौगोलिक इलाकों में ऊर्जा संसाधनों की खोज के लिए सरकार को स्पष्ट नीतियाँ और आसान नियम बनाने होंगे ताकि घरेलू उत्पादन में तेजी आ सके।

इसके साथ-साथ जैव ईंधन, ग्रीन हाइड्रोजन और इलेक्ट्रिक वाहनों को भी ऊर्जा नीति का अहम हिस्सा बनाना होगा। एथेनॉल मिश्रण, बायोगैस

प्लांट और कृषि अपशिष्ट से ऊर्जा उत्पादन जैसे प्रयास न केवल ऊर्जा संकट को कम करेंगे बल्कि किसानों की आय बढ़ाने में भी सहायक हो सकते हैं। अंततः ऊर्जा आत्मनिर्भरता केवल सरकारी नीतियों से ही नहीं, बल्कि जनभागीदारी से भी संभव है। ऊर्जा की बचत, सौर ऊर्जा अपनाएँ और स्वच्छ तकनीक के उपयोग में आम नागरिक की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। यदि सरकार, उद्योग और समाज मिलकर प्रयास करें तो भारत न केवल ऊर्जा संकट से उबर सकता है बल्कि आने वाले वर्षों में ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में मजबूत कदम भी बढ़ा सकता है।

घरेलू उत्पादन कैसे बढ़ाएँ

वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता, तेल-गैस संकट और आपूर्ति शृंखला में बार-बार आने वाली बाधाओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि किसी भी देश की आर्थिक मजबूती का आधार उसका मजबूत घरेलू उत्पादन होता है। यदि भारत को दीर्घकालीन आर्थिक स्थिरता और आत्मनिर्भरता हासिल करनी है, तो घरेलू उत्पादन बढ़ाने की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। सबसे पहले लघु, कुटीर और मध्यम उद्योगों को मजबूत करना आवश्यक है। यही क्षेत्र

सबसे अधिक रोजगार पैदा करता है और स्थानीय स्तर पर उत्पादन बढ़ाता है। सरकार को इन उद्योगों को सस्ती पूंजी, तकनीकी सहायता और आसान नियम उपलब्ध कराने चाहिए। दूसरा महत्वपूर्ण कदम कृषि और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ावा देना है। यदि कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण देश में ही बड़े पैमाने पर होगा तो किसानों की आय भी बढ़ेगी और आयात पर निर्भरता भी कम होगी। तीसरा, तकनीक और नवाचार को उत्पादन से जोड़ना जरूरी है। आधुनिक मशीनों, डिजिटल तकनीक और अनुसंधान के माध्यम से उत्पादन की गुणवत्ता और मात्रा दोनों बढ़ाई जा सकती हैं। इसके अलावा सरकार को स्थानीय उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए। लोकल फॉर लोकल जैसी पहल तभी सफल होगी जब उपभोक्ता भी स्वदेशी उत्पादों को प्राथमिकता दे दें। घरेलू उत्पादन बढ़ाना केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि उद्योग, किसान और उपभोक्ता—सभी की साझा भागीदारी से ही यह संभव है। यदि सही नीतियाँ और जनसहयोग के साथ प्रयास किए जाएँ तो भारत न केवल अपनी जरूरतें पूरी कर सकेगा बल्कि वैश्विक बाजार में भी मजबूत स्थान बना पाएगा।